प्रभात

इस अंक में .....

★ नेपाल - गुणात्मक सैनिक छलांग का एक साल 4
★ तेजी से फैलता हिन्दू फासीवाद 7
★ पीजीए सप्ताह की रिपोर्टें 9
★ श्रद्धांजलि 13
★ एशियन सोशल फोरम पर... 14
★ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए द्वार खुले... 20
★ भूख से मरने से बेहतर है लड़कर मरना 22

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) [पीपुल्स वार] दण्डकारण्य स्पेशल ज़ोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष - 16 अंक - 1 जनवरी - मार्च 2003 सहयोग राशि - 10 रुपए

8 मार्च का सन्देश

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस जिन्दाबाद !

महिलाओं पर राजकीय हिंसा और हिन्दू फासीवादी ताकतों के हमलों के खिलाफ आवाज बुलन्द करो !!

आज 8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक महिला दिवस। पितृसत्तात्मक उत्पीड़न और शोषणपरक व्यवस्था के खिलाफ दुनिया भर की महिलाओं के संघर्ष का प्रतिक। यह एक ऐसा दिन है जब महिलाएं संगठित होकर सभी प्रकार के उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ अपनी अदम्य शक्ति का प्रदर्शन करती हैं। यह दिन प्रतिक्रियावाद की स्याह ताकतों के खिलाफ महिलाओं के सामूहिक संघर्ष की नुमाइंदगी करता है।

अपने अधिकारों के लिए, समानता के लिए, अपनी पहचान के लिए महिलाओं ने 19वीं सदी से ही लड़ना शुरू किया। 1910 में सम्पन्न समाजवादी श्रमिक महिलाओं के दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सामने कॉमरेड क्लारा जेटकिन ने महिलाओं के लिए एक वार्षिक दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था। 19 मार्च 1911 को मनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस में 10 लाख महिलाओं ने भाग लिया। 1913 से 8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में तय हुआ। काम के घण्टे कम करने, बेहतर वेतन, मताधिकार एवं बाल श्रम उन्मूलन की मांगों को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाए जाने लगा। हमारे देश में पहली बार 1943 में 8 मार्च को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। 1977 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मान्यता दे दी। अब तो विभिन्न सरकारें इसे एक उत्सव के तौर पर मनाती हैं। महिलाओं के समान अधिकारों की बात को बाजू में रखकर रंगोली प्रतियोगिता, सौन्दर्य प्रतियोगिता, बागवानी, सजने-संवरने की प्रतियोगिता आदि आयोजित करती हैं। इस तरह सरकारें महिलाओं को संघर्ष के रास्ते से भटकाने का प्रयास करती हैं।

आज विश्वभर में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जा रहा है। क्रांतिकारी आन्दोलन में तथा राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों में लाखों महिलाएं सक्रिय भूमिका निभा रहीं हैं। फिलिपीन्स, पेरू, नेपाल, कोलम्बिया जैसे देशों में क्रांतिकारी आन्दोलनों में तथा श्रीलंका, फिलीस्तीन जैसे राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों में लुटेरे वर्गों के भाड़े के सैनिकों से बड़ी वीरतापूर्वक संघर्ष कर रहीं हैं। मानव बम बन कर दुश्मन के सीने पर विस्फोट करके लुटेरे वर्गों की नींद हराम कर रही हैं। भारत की क्रांतिकारी आन्दोलन में भी "आसमान में आधा हिस्सा – संघर्ष में आधा हिस्सा" कहते हुए महिलाएं महान कुरबानियों की परम्परा को जारी रखी हुई हैं।

भारत में महिलाओं के संघर्षों का काफी पुराना इतिहास है। अंग्रेजी साम्राज्यवादियों के खिलाफ 1857 की लड़ाई से लेकर, असहयोग, अवज्ञा आन्दोलन के अलावा क्रांतिकारी आन्दोलन तथा आजाद हिन्द फौज में शामिल होकर महिलाओं ने अनेक कुरबानियां दीं। महिलाओं के प्रति भेदभाव तथा कुरीतियों के खिलाफ 19वीं सदी में भी महिलाओं ने कई आन्दोलन किए। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में 1940 के दशक में किए गए तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष में महिलाओं ने शानदार भूमिका निभाई। लेकिन बाद में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्व के गद्दारी के चलते संघर्षरत महिलाओं को फिर से दासता के बंधनों में कैद होना पड़ा।

1960 के दशक के आखिर में जब नक्सलबाड़ी की मेघ-गर्जना

हुई, देशभर में महिला संघर्षों में एक नई उभार सी आई है। देशभर में कई जनवादी एवं क्रांतिकारी महिला संगठनों की स्थापना हुई। क्रांतिकारी आन्दोलन के क्षेत्रों में हजारों किसान-मजदूर महिलाओं ने अनेक संघर्ष खड़े किए। समाज की मुक्ति के साथ-साथ महिला मुक्ति हासिल करने के लिए वे पितृसत्ता को और उसे पालने-पोसने वाली शोषणकारी व्यवस्था को निशाना बनाकर अपने संघर्षों को चला रही है। नवजनवादी क्रांति के स्पष्ट लक्ष्य को सामने रखकर हथियारबन्द कार्रवाईयों में महिलाएं बड़ी संख्या में भाग लेते हुए अनमोल कुरबानियां दे रही हैं। इस तरह जहां वे असंख्य उत्पीड़ित महिलाओं को प्रेरणा दे रही हैं, वहीं दूसरी तरफ शासक वर्गों की नींदें उड़ा रही हैं।

महिलाओं पर बेलगाम राजकीय हिंसा

लुटेरे शासक वर्ग महिला संघर्षों पर क्रूरतम दमन चला रहे हैं। क्रांतिकारी जनयुद्ध और राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों में भाग ले रही महिलाओं पर आज अमानवीय राजकीय हिंसा जारी हैं। शासक वर्गों के भाड़े के सैन्य बल आन्दोलनों का दमन करने में महिलाओं के साथ यौन अत्याचार को एक हथियार के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। कश्मीर और पूर्वोत्तर में सैन्य बलों द्वारा महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार की अनेक घटनाएं घट रही हैं। इसके अलावा शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वाली महिलाओं पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज, गोलीबारी एक आम बात हो गई है। आन्दोलनकारियों से सम्बन्ध होने का आरोप लगाकर महिलाओं को बड़ी संख्या में गिरफ्तार कर रहे हैं। सरकार की सोच यह है कि वह पाशविक बल का प्रयोग कर महिलाओं को संघर्ष की राह से अलग कर सकती है, जोकि गलत साबित हो रही है।

आन्ध्रप्रदेश, दण्डकारण्य, बिहार-झारखण्ड, उड़ीसा आदि क्षेत्रों में जहां दीर्घकालीन जनयुद्ध तेजी से चल रहा है, महिलाओं के खिलाफ राजकीय हिंसा अपने चरम पर है। महिलाओं को क्रांतिकारी आन्दोलन से अलग करने के लिए पुलिस बल उन पर बेहद हिंसा का प्रयोग कर रहे हैं। हत्याएं, अवैध गिरफ्तारियां, यातनाएं और यौन अत्याचार आदि बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। दण्डकारण्य में छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों के पुलिस बल महिलाओं के खिलाफ हत्या और अत्याचार का सिलसिला जारी रखे हुए हैं।

30 दिसम्बर को दक्षिण बस्तर के सीतानगर में शांतिपूर्वक प्रदर्शन करके लौट रही जनता पर पुलिस ने अन्धाधुन्ध गोलीबारी करके सोमे नामक एक युवती की क्रूरतापूर्ण हत्या की। वर्ष 2001 के जुलाई और दिसम्बर के बीच पुलिस ने गड़चिरोली जिले के रेंगुलवाई गांव (अहेरी एरिया) में एक महिला, ग्राम वट्टेली की पांच महिलाओं और ग्राम गड़देवाही की एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया। पुलिस सोची-समझी साजिश के तहत ही महिलाओं पर यौन अत्याचार कर रही है। वह समझती है कि बलात्कार की शिकार महिला दोबारा सिर उठा नहीं सकेगी और संघर्ष में शामिल नहीं हो सकेगी। लेकिन दण्डकारण्य में ही नहीं, बल्कि तमाम संघर्ष के इलाकों में महिलाएं पुलिस दमन का मुकाबला करते हुए संघर्षों में उत्साहपूर्वक भाग ले रहीं हैं।

पितृसत्तात्मक हिन्दू फासीवाद : महिला आन्दोलन की सबसे बड़ी चुनौती

पिछले एक साल के दौरान महिला आन्दोलन को हिन्दू फासीवादी ताकतों के हमले का सामना करना पड़ा। नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में कायम भाजपा की राज्य सरकार की देखरेख में गुजरात हिन्दू फासीवादियों की एक प्रयोगशाला बन चुका है। इन ताकतों ने गुजरात में देश के विभाजन के बाद के इतिहास में मुस्लिम अल्पसंख्यकों के सबसे बर्बर और अमानवीय नरसंहार को अंजाम दिया। उन्होंने मुस्लिम अल्पसंख्यकों को योजनाबद्ध ढंग से निशाना बनाया और अपने झूठे तंत्र के जरिए पूरे मुस्लिम समुदाय को राष्ट्र-विरोधी, समाज-विरोधी और आतंकवादी घोषित कर दिया। उन्होंने सैकड़ों लोगों को जिन्दा जलाया, मारा-काटा और न जाने कितने लोगों को जिन्दगी भर के लिए अपाहिज बना दिया। उन्होंने मुसलमानों की सम्पत्तियों और माल-असबाब को लूटा और तबाह किया। इस तरह की पुरानी घटनाओं की तरह इस बार भी हिन्दू फासीवादी ताकतों ने अपने पितृसत्तात्मक चरित्र का बेहद भयानक और हिंसक तरीके से प्रदर्शन किया। महिलाओं और लड़कियों का अपहरण किया, सामूहिक बलात्कार किया और मार डाला। कितनी ही औरतों को उनके बच्चों और उनके परिवार के लोगों के सामने भयानक दरिंदगी का शिकार बनाया और जिन्दा आग में झोंक दिया। उनकी निर्मम नस्लवादी सोच को रोंगटे खड़े कर देने वाली उन घटनाओं से समझा जा सकता है जहां उन्होंने अपने त्रिशूलों के जरिए गर्भवती औरतों के पेट चीरकर उनके अजन्मे शिशुओं को तलवार की नोंक पर रखकर आग में फेंक दिया। उनकी दरिंदगी का सबसे भयानक हमला महिलाओं ने झेला। उन्होंने अपने पूरे परिवार खो दिए हैं। अनगिनत बच्चे अनाथ हो गए हैं। ऐसे लोगों पर असुरक्षा और डर की मनोदशा आज भी हावी है, उनकी मानसिक और शारीरिक पीड़ा और सदमे का असर आज भी कायम है। इन फासीवादी हमलों को न सिर्फ सरकार का समर्थन प्राप्त था, बल्कि विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारियों ने इनमें सक्रिय भाग लिया।

आज देश में हो रहे जनवादी एवं क्रांतिकारी संघर्षों को कुचलने के लिए सरकार काले कानूनों का सहारा ले रही है। संघर्ष के क्षेत्रों में पुलिस बलों का आधुनिकीकरण कर रही है। और दूसरी तरफ सरकार हिन्दू फासीवाद को मजबूती से आगे बढ़ा रही है। मूलभूत समस्याओं से जनता का ध्यान हटाकर उसे 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना का सपना दिखा रही है। इस तरह दलाल पूंजीवादी एवं सामंती शासक वर्ग जनता को लूटने का सिलसिला आसानी से चला सकेंगे। साम्राज्यवाद, विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने घुटने टेककर वे भूमण्डलीकरण की नीतियों को लागू कर रहे हैं। इससे जनता में बढ़ रहे क्रोध और असंतोष को भटकाने के लिए शासक वर्गों को हिन्दू फासीवाद एक हथियार के तौर पर मिल गया है। मुसलमान अल्पसंख्यकों और पाकिस्तान को दुश्मन के रूप में चित्रित करते हुए उन्मादपूर्ण प्रचार कर रहे हैं। इन सभी के सबसे बुरे परिणाम महिलाओं को ही झेलने पड़ रहे हैं। इसलिए महिलाओं को सचेत होना चाहिए।

जो सरकारें संघर्षरत महिलाओं पर तथा अल्पसंख्यक महिलाओं

पर अमानवीय हमले व अत्याचार कर रही हैं, वही सरकारें महिलाओं को रिझाने के लिए तरह-तरह की योजनाओं और घोषणाओं की झड़ी लगा रही हैं। 'महिला सशक्तिकरण' की बात कर रही हैं। महिलाओं को विधायिका में 33% आरक्षण का सब्ज बाग लम्बे अरसे से दिखाते चली आ रही हैं। सच यह है कि इन घोषणाओं और योजनाओं का मकसद महिलाओं की मूलभूत समस्याओं को दूर करना नहीं है, बल्कि महिलाओं को संघर्ष की राह से दूर करना है।

देश में महिलाओं के साथ प्रताड़ना और बलात्कार की घटनाएं बड़ी तेजी से बढ़ रही हैं। दहेज-हत्या और भ्रूण-हत्या की घटनाएं भी आम हो गईं। इसके बावजूद कि इन्हें रोकने के लिए कानून में कई प्रावधान मौजूद हैं, फिर भी सरकार उन्हें लागू करके ऐसी घटनाओं को काबू में लाने की कोशिश नहीं कर रही है। उलटे खुद पुलिस, राजनेता और सरकारी अधिकारी ही इनमें शामिल होते हैं। अब सरकार ने बलात्कारियों को मौत की सजा देने के कानून पर विचार कर रही है। इस कानून से बलात्कार की घटनाएं कम होने की उम्मीद रखना बेकार है क्योंकि अदालतें भी अपनी वर्ग-नीति के मुताबिक चलती हैं – पैसा और सत्ता जिनके पास होते हैं अदालतें उनके ही अनुकूल फैसले सुनाती हैं। समाज में बलात्कार की घटनाओं के बढ़ने का असली कारण समाज में तेजी से फैल रही साम्राज्यवादी जहरीली संस्कृति है। इसके खिलाफ एक शब्द भी न बोलकर बलात्कारियों को मौत की सजा देने की बात करना बेमानी है।

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इस अवसर पर महिलाओं को अपने संघर्ष तेज करने का संकल्प लेना चाहिए। खासकर बढ़ती राजकीय हिंसा और हिन्दू फासीवादी हमले के खिलाफ लड़ने के लिए व्यापक मोर्चा बनाने के लिए कदम बढ़ाना चाहिए। मुक्त इलाके की स्थापना के लक्ष्य से जारी जनयुद्ध के साथ इस संघर्ष को जोड़ना चाहिए।❖

संघर्ष की राह पर छत्तीसगढ़ के शिक्षाकर्मी

'समान कार्य - समान वेतन' की एक सूत्रीय मांग को लेकर छत्तीसगढ़ के 28 हजार शिक्षाकर्मियों ने 4 फरवरी से आन्दोलन की राह पकड़ ली। शिक्षाकर्मियों द्वारा पिछले काफी समय से इस मांग को लेकर आन्दोलन किया जा रहा है। समय-समय पर शिक्षाकर्मीयों ने सड़क पर उतरकर सरकार से मांग भी की, लेकिन सरकार इनकी जायज मांग को लगातार ठुकराती चली आ रही है। जहां नियमित व्याख्याता को 5,500 रु., शिक्षक को 5,000 रु. तथा सहायक शिक्षक को 4,000 रु. के मूल वेतन पर 45 प्रतिशत भत्ता दिया जा रहा है, वहीं उसी स्कूल में कार्यरत शिक्षाकर्मियों को समान ग्रेड वर्ग एक को 1,200 रु., वर्ग दो को 1,000 रु. तथा वर्ग तीन को 800 रु. मूल वेतन दिया जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो सरकार शिक्षाकर्मियों से बेगारी काम करवा रही है। इस असमानता को लेकर शिक्षाकर्मियों में आक्रोश है।

सरकार ने शिक्षाकर्मियों की इस आन्दोलन को कुचलने के लिए दमनात्मक कार्रवाइयां अपनाईं। सरकार ने आन्दोलनरत शिक्षाकर्मियों के खिलाफ कई बार बल प्रयोग का तरीका अपनाया। गिरफ्तारियां, लाठीचार्ज, धमकियां, आदि झेलते हुए भी शिक्षाकर्मी अपनी मांगें हासिल करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। सरकार के अलोकतांत्रिक रवैए को समझने के लिए इतना जानना काफी है कि अजीत जोगी शिक्षाकर्मियों से मिलने को भी तैयार नहीं हुए। हड़ताल के दौरान रायपुर पहुंचने वाले शिक्षाकर्मियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। एक लॉज में ठहरे हुए शिक्षाकर्मियों के संगठन नेताओं को पुलिस ने घसीटकर बाहर ले जाकर डंडों से मारा।

छत्तीसगढ़ के सभी संभागों में शिक्षाकर्मी हड़ताल पर गए थे। सरकार ने काम पर न आने से नौकरी से निकाल देने की धमकी दी। मुख्यमंत्री अजीत जोगी अपने बस्तर प्रवास के दौरान जिला व पुलिस प्रशासन को सख्त आदेश दिया कि किसी भी हाल में शिक्षाकर्मी उन तक नहीं पहुंच न पाएं। अथवा बैनर, पोस्टर लेकर सामने न आ सकें। इसके चलते सभी जगहों में शिक्षाकर्मियों से बैनर-पोस्टर छीन लिए गए और आवाज को दबाने की कोशिश की गई। इससे साफ पता चलता है कि जोगी सरकार लोगों के संवैधानिक अधिकारों की भी कद्र नहीं करती। इसके बावजूद शिक्षाकर्मियों ने दृढ़तापूर्वक हड़ताल जारी रखी।

आखिर में बिना किसी ठोस उपलब्धी के ही हड़ताल वापिस ली गई। यह शिक्षाकर्मियों के नेतृत्व की कमजोरी का नतीजा था। इसलिए शिक्षाकर्मियों को सही और सक्षम नेतृत्व को चुन लेना होगा, जो अपनी मांगों को हासिल करने के लिए दृढ़ता से लड़ सके और शिक्षाकर्मियों के हितों के साथ खिलवाड़ न करे। भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] ने शिक्षाकर्मियों के जायज संघर्ष का तहेदिल से समर्थन किया। हमारी पार्टी शिक्षाकर्मियों से अपील करती है कि आप अपने कड़वे अनुभवों से सीख लें और जुझारू संघर्षों के लिए खुद को तैयार करें। दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी आन्दोलन का समर्थन आपको आगे भी मिलता ही रहेगा। शिक्षाकर्मियों को यह भी समझ लेना होगा कि आपकी समस्याएं समाज के तमाम अन्य उत्पीड़ित तबकों के लोगों की समस्याओं से जुड़ी हुई हैं। और इन सबकी समस्याओं की जड़ इस शोषणकारी व्यवस्था में है। इसलिए इस व्यवस्था को पूरी तरह से बदलने के लक्ष्य से जारी व्यापक सामाजिक क्रान्ति में भागीदार बने बिना कोई भी तबका या वर्ग अपनी समस्याओं को सम्पूर्ण और स्थाई तौर पर हल नहीं कर सकेगा। इसलिए हम आशा करते हैं कि शोषित शिक्षाकर्मी अपनी समस्याओं के हल के लिए लड़ने के साथ-साथ, यहां दण्डकारण्य क्षेत्र में जारी जनयुद्ध के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे। ❖

22 अप्रैल को पार्टी की 34वीं वर्षगांठ और लेनिन के 134वें जन्मदिन के अवसर पर

गांव-गांव में सभा-सम्मेलनों का आयोजन करो !

नेपाल : जंग के मोर्चे से रिपोर्ट

गुणात्मक सैनिक छलांग का एक साल

["दि वर्कर" के अंक-8 में छपे एक आलेख का अनुवाद – सम्पादकमण्डल]

अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 11 सितम्बर को हुए हमलों की पहली वर्षगांठ के अवसर पर 2 सितम्बर को नेपाली प्रधानमंत्री शेर बहादुर देऊबा को खत लिखकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई के सिलसिले में उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कीं। जॉर्ज बुश के इस खत से पता चलता है कि सी.पी.एन. (माओवादी) की अगुवाई में चल रही सैनिक मुहिम का असर अब कितना व्यापक हो चुका है! गौरतलब है कि जब अमेरिका में 11 सितम्बर की याद में सालाना आयोजन होने वाले थे तो उसके सिर्फ तीन दिन पहले नेपाल में 24 घंटे के भीतर प्रतिक्रियावादी सरकार को अब तक का सबसे बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। इस कार्रवाई के दौरान पूर्वी एवं पश्चिमी नेपाल में उसके 100 से ज्यादा हथियारबंद लोग मारे गए और 75 से ज्यादा हथियारबंद लोग ज़ख्मी हुए।

जनमुक्ति सेना के योद्धा विजयी जश्न मनाते हुए

अरघाखांची के जिला मुख्यालय सांधीखरका (जो काठमांडू से सिर्फ 350 किलोमीटर की दूरी पर है) में किए गए मुख्य सैनिक हमले में 66 सुरक्षाकर्मी मारे गए और लगभग 3 दर्जन घायल हुए। इस हमले में एक सैनिक बैरक, जिला मुख्यालय, जिला पुलिस ऑफिस और मुख्य जिला अधिकारी का आवास पूरी तरह नष्ट हो गए। पी.एल.ए. (जन मुक्ति सेना) ने सरकारी स्वामित्व वाले राष्ट्रीय वाणिज्य बैंक पर छापा मारा और वहां से 9.2 करोड़ रुपए नेपाली मुद्रा के बराबर मूल्य की नकदी और चल सम्पत्तियां जब्त कीं। उन्होंने हथियारों के एक बड़े ज़खीरे पर भी कब्जा किया जिसमें एस.एल.आर., जी.पी.एम., एल. एम.जी., एस.एम. जी., दो-इंची मोर्टार और हथगोले शामिल थे। सरकारी अनुमानों के मुताबिक सांधीखरका में इस दौरान कुल 58 करोड़ रुपये से ज्यादा की सरकारी संपत्ति तबाह हुई। गौरतलब है कि इस हमले से निपटने के लिए एक रात्रिदर्शी हैलीकॉप्टर भी भेजा गया था मगर भारी लड़ाई के चलते उसे वापस भागना पड़ा। इसी तरह सेना के दो अन्य हैलीकॉप्टरों को भी गोलियों का निशाना बनाया गया और उन्हें भी मैदान छोड़कर भागना पड़ा। यह काठमांडू से सबसे कम दूरी पर किया गया हमला था। इससे पता चलता है कि पी.एल.ए. अब धीरे-धीरे फासीवादी भ्रातृहंता, राजहंता ज्ञानेन्द्र के गढ़ काठमांडू के नजदीक पहुंचती जा रही है। जिस चीज की वजह से यह सैनिक हमला खासतौर से ज्यादा महत्त्वपूर्ण और यादगार हो जाता है, वह यह है कि इसे कॉमरेड सुरेश वागले की शहादत को श्रद्धांजलि देने के लिए संपन्न किया गया था। कॉमरेड सुरेश वागले सी.पी.एन. (माओवादी) की पोलित ब्यूरो के वैकल्पिक सदस्य थे जिनकी प्रतिक्रियावादी ताकतों ने हत्या कर दी थी। गौरतलब है कि सांधीखरका में किए गए सैनिक हमले से पहले चौबीस घंटे के भीतर भीमन पुलिस चौकी पर भी एक इतना ही कामयाब सैनिक हमला बोला गया था। भीमन सिंधूली जिला मुख्यालय से 19 किलोमीटर की दूरी पर और नेपाल के पूर्वी इलाके में स्थित है। इस हमले में 49 हथियारबंद कर्मचारी मारे गए और 3 दर्जन से ज्यादा घायल हुए। पूर्वी क्षेत्र में यह अब तक का सबसे बड़ा और कामयाब सैनिक हमला था जिससे सरकार को भारी नुकसान उठाना पड़ा। भीमन में जब सरकारी सैनिकों के पैर उखड़ने लगे तो उनकी मदद के लिए अतिरिक्त सैनिक टुकड़ियां भेजी गईं परंतु भीमन पहुंचने से पहले ही वह भी छापामार हमलों में घिर गईं और उनका एक सिपाही मारा गया जबकि दो घायल हुए। भीमन पर किए गए हमले का क्रांतिकारी कम्युनिस्टों के लिए एक प्रतीकात्मक महत्त्व भी है। यह वही स्थान है जहां प्रतिक्रियावादी सरकार ने कॉमरेड आजाद को शहीद किया था। वह जनयुद्ध को आगे न बढ़ाने के लिये तत्कालीन चौथी कांग्रेस के खिलाफ बगावत का परचम उठाने वाले पहले व्यक्ति थे।

सैनिक जमावड़े को मदद देने के लिये 26 नवम्बर 2001 के दिन लगाए गए आपातकाल से भी पी.एल.ए. की मारक क्षमता और नेपाल में जनयुद्ध के फैलाव पर तकरीबन कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। अगर इससे कोई फर्क पड़ा भी है तो सिर्फ यह कि अब रोज होने वाली मौतों की संख्या में फर्क आ गया है। अब औसतन हर रोज 5-7 लोग मारे जा रहे हैं। ये कोई छिपी हुई बात नहीं है कि आर.

एन.ए. (शाही सेना) मुख्य रूप से जिला मुख्यालयों, शहरी केंद्रों और सड़क के किनारों तक महदूद है जबकि पी.एल.ए. का बाकी तमाम देहाती इलाकों पर नियंत्रण है। इसीलिए तथाकथित "मुठभेड़ों" में जो लोग मारे गए हैं उनमें से ज्यादातर निर्दोष लोग या जेलों में बंद राजनीतिक कैदी थे।

आर.एन.ए. की तरफ से अभी तक एक भी सैनिक आक्रमण नहीं किया गया है जबकि दूसरी तरफ पी.एल.ए. की तरफ से किये गए हर सैनिक आक्रमण को जबरदस्त कामयाबी मिली है और उसका नुकसान बहुत कम रहा है। इससे पता चलता है कि आर.एन.ए. अभी भी रक्षात्मक मुद्रा में है। मिसाल के तौर पर अच्छम जिला मुख्यालय मंगलसेन में सुरक्षा टुकड़ियों पर किए गए सैनिक हमलों को ही लीजिए। राजधानी से 600 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित इस जगह पर 3 फरवरी 2002 को हमला किया गया जिसमें 48 सशस्त्र पुलिसकर्मी और 46 सैनिक मारे गए। बहुत सारे लोग घायल भी हुए। हमले में मुख्य जिलाधिकारी और राष्ट्रीय जांच विभाग का निदेशक और उसकी पत्नी भी मारे गए। जिला पुलिस मुख्यालय सहित 10 सरकारी दफ्तर पी.एल.ए. ने आग के हवाले कर दिए और बड़ी तादाद में एस.एल.आर., एल.एम.जी., 3 रॉकेट लांचर, 6 रॉकेट और बहुत सारे हथगोले एवं कारतूस बरामद किए। पी.एल.ए. ने सफे बाजार स्थित नजदीकी हवाई अड्डे को भी नष्ट कर दिया। यह हमला आपातकाल की घोषणा के तीन माह से भी कम समय के भीतर किया गया था। गौरतलब है कि इससे पहले सरकार यह दावा करते नहीं अघाती थी कि शाही सेना की गोलबंदी महज चंद हफ्ते के भीतर आंदोलन को नेस्तनाबूद कर देगी।

दुश्मन के लिये और भी शर्मिंदगी की बात यह है कि लमही स्थित पुलिस चौकी और सतबरिया के सैनिक बेस कैम्प भी हमलों से नहीं बच सके। ये दोनों स्थान डांग जिले में पड़ते हैं और यहां 11 अप्रैल 2001 को हमला किया गया। इस हमले ने सरकार के इस दावे को खोखला साबित कर दिया कि उन्होंने 3 नवम्बर 2001 को डांग जिला मुख्यालय घोरही स्थित हथियार डिपो और भारी सुरक्षा घेरे से लैस बैरक पर हुए सैनिक हमले से काफी कुछ सीखा है। इस हमले के बाद ही नेपाल में इमरजेंसी लागू की गई थी और सैनिक जमावड़े के आदेश दिए गए थे। इन दोनों जगहों पर हुए हमलों के नतीजे में 34 सशस्त्र लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हुए। पी.एल.ए. ने राष्ट्रसीय वाणिज्य बैंक पर भी छापा मारा और लमही स्थित नेपाल विद्युत प्राधिकरण के उपकेंद्र को नष्ट कर दिया। इस अभियान में पी.एल.ए. ने जो हथियार और गोला-बारूद जब्त किया उसमें नब्बे एस.एल.आर., तीन एल.एम.जी., तीन एस. एम.ओ., उनसठ .303 रायफलें, सात मैगनम, सत्रह पिस्तौल व रिवाल्वरें, आठ शॉटगन, अड़तालीस हथगोले शामिल थे।

आर.एन.ए. द्वारा रोलपा स्थित लिजने के माओवादी प्रशिक्षण शिविर पर किए गए बहुप्रचारित हमले को भी बाद में पाया गया कि यह सफेद झूठ था। सरकार दावा कर रही थी कि उन्होंने 350 "आतंकवादियों" को घेर कर मार डाला है। मगर सच्चाई यह है कि लिजने कैम्प में पी.एल.ए. को आर.एन.ए. की घेरेबंदी के बारे में पहले ही पता चल गया था और इसलिए उन्होंने आर.एन.ए. के घेरे को खींचते-खींचते घने जंगलों में पहुंचा दिया और वहां घेर कर उन पर हमला बोल दिया। नतीजतन आर.एन.ए. के लोगों को शर्मिंदगी के साथ भागना पड़ा और भागते समय उनके शरीर पर सिर्फ भीतरी कपड़े ही बाकी बचे थे। दरअसल आर.एन.ए. को इस बात का पता नहीं था कि उसी महिने में इसी रोलपा जिले में एक और जगह पर दूसरा हमला भी होने वाला था। रोलपा में गाम स्थित सेना के बेस कैम्प पर 7 अप्रैल 2001 को एक कामयाब हमला बोला गया। गौरतलब है कि गाम स्थित सैनिक बेस कैम्प अमेरिकी सैनिक सलाहकारों की देख-रेख में मजबूत सुरक्षा घेरे के साथ और आधुनिक डिजाइन के मुताबिक बनाया गया था। इस हमले में भी 34 सैनिक कर्मचारी मारे गए। जब यह हमला हुआ उस समय कुछ अमेरिकी सैनिक कर्मचारी भी कैम्प में मौजूद थे पर वे फटाफट भाग निकलने में कामयाब हो गए। यहां इतना भारी असलहा पी.एल. ए. के हाथ लगा कि उसकी तादाद डांग में 23 नवम्बर, 2001 को घोरही सैनिक बैरक पर किए गए पहले ऐतिहासिक हमले में बरामद हुए हथियारों के जखीरे से कुछ ही कम थी।

23 नवम्बर 2001 को आपातकाल की घोषणा से लेकर अब तक नेपाल के तकरीबन तमाम इलाकों में छोटी-छोटी अनगिनत सैनिक कार्रवाहियां हो चुकी हैं। इस दौरान भारी संख्या में छापामार हमले हुए हैं, अनगिनत टेलीफोन एक्सचेंजों, लगभग 40 रिपीटर स्टेशनों, सैकड़ों ग्राम विकास कार्यालयों और बिजलीघरों पर हमले हुए हैं। इसके साथ ही क्रांति के शत्रुओं को चुन-चुन कर निशाना बनाया गया है और दूसरी तरफ चुनिंदा फासीवादी और सरकारी कर्मचारियों की सम्पत्ति और घरों को विस्फोटों से उड़ाया गया है। इसके अलावा शहरी इलाकों में औचक हुए हमलों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। विशेष रूप से नेपाल की राजधानी काठमांडू में ऐसे कई हमले हुए हैं। मार्च 2002 में राजधानी के एक सरकारी अखबार, गोरखापत्र कॉर्पोरेशन के दफ्तर को बम से उड़ा दिया गया। लगभग उसी समय शाही महल के प्रैस सचिव मोहन बहादुर पांडे के एक निजी कॉलेज पर भी बम से हमला किया गया। यहां तक कि एक स्पेशल टॉस्क फोर्स (एस.टी.एफ.) ने राजधानी में एक सैनिक ठिकाने पर भी हमला बोला जिससे ऐतिहासिक "सिलखाना" को भी क्षति पहुंची। "सिलखाना" में आर.एन.ए. के बेहद पुराने हथियार और गोला-बारूद रखे हैं। यह हमला भी मार्च 2002 में हुआ था। राजधानी के बीचोंबीच, तत्कालीन प्रधानमंत्री शेर बहादुर देऊबा के केंद्रीय मुख्यालय पर बम से हमला किया गया। एक और महत्त्वपूर्ण हमले में 25 अगस्त 2002 को काठमांडू स्थित तेज और करण एंटरप्राइजेज की इमारतों पर धावा बोला गया। इस हमले में 22 नई कारें और बसें तबाह हुईं। यह प्रतिष्ठान एक भारतीय व्यवसायी का है जिससे भारत में भी काफी बैचेनी पैदा हुई। अप्रैल 2001 में चितवान स्थित

कोका-कोला की एक बॉटलर फैक्टरी में बम विस्फोट हुआ। इसी प्रकार हैलीकॉप्टरों पर भी अनगिनत हमले हुए। इनमें से सबसे ताजा हमला करनाली एयरवेज के हैलीकॉप्टर पर बोला गया। सोलूखुम्बू जिला स्थित जूबा में इस कम्पनी के एक हैलीकॉप्टर को आग में झोंक दिया गया। गौरतलब है कि पिछले नवम्बर में पी.एल.ए. ने इसी जिले के अंदर फापलू हवाई अड्डे के टॉवर को नष्ट कर दिया था। इन तमाम हमलों से सरकार को काफी माली नुकसान हुआ है। बम की अफवाहों, विभिन्न नगरपालिका दफ्तरों में बम विस्फोट की घटनाएं तो इतनी हैं कि उनका ब्यौरा दिया ही नहीं जा सकता।

नेपाल में बढ़ती बगावत की समस्या का व्यावहारिक हल निकालने के लिए अमेरिकी दूतावास द्वारा जारी किए जाने वाले बयानों की बढ़ती संख्या, अमेरिका और ब्रिटेन तथा यूरोपीय देशों के विदेश मंत्रियों के बार-बार दौरों और जवाब में हथियार व गोला-बारूद हासिल करने के लिए नेपाली प्रधानमंत्री द्वारा इन देशों की यात्राओं और किसी न किसी बहाने से विभिन्न देशों के सैनिक सलाहकारों का बार-बार नेपाल आना इस बात को जाहिर करता है कि नेपाल के जनयुद्ध ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कितना ध्यान आर्कषित किया है। केंद्रीय समिति के वैकल्पिक सदस्य बामदेव क्षेत्री और नेपाल के चार पत्रकारों तथा कई नेपाली नागरिकों का भारत से अवैध प्रत्यर्पण तथा नेपाल में किसी न किसी बहाने से विदेशी सैनिक कर्मचारियों की तैनाती, ये सब चीजें यही दर्शाती हैं कि नेपाल में जनयुद्ध के तेज विकास से दुनिया भर के शासक वर्गों में कितनी बैचेनी फैल रही है।

खलांगा में एक और प्रेरणास्पद सैनिक हमला किया गया। यह जगह पश्चिमी नेपाल स्थित जुमला जिले में करनाली क्षेत्र का क्षेत्रीय मुख्यालय है। इसके अलावा मध्य-पश्चिमी इलाके में गोरखा जिला के टाकूकोट में भी हमला किया गया। ये दोनों हमले नवम्बर 2002 में किए गए। इन दोनों सैनिक हमलों का एक भारी ऐतिहासिक महत्त्व है क्योंकि ये शाही तख्तापलट के बाद पहले सैनिक हमले हैं।

सी.पी.एन. (माओवादी) के आवाहन पर और यू.आर.पी.सी. की देखरेख में तीन दिन के ऐतिहासिक बंद के बाद 14 नवम्बर को पी. एल.ए. के सैकड़ों लड़ाकों ने कई सुरक्षा ठिकानों पर हमले बोल दिए। इन ठिकानों में एक सैनिक बैरक, सशस्त्र पुलिस बेस, क्षेत्रीय पुलिस इकाई और जिला पुलिस कार्यालय शामिल थे। खलांगा में इन ठिकानों पर चारों ओर से हमला बोला गया जिससे 33 पुलिसकर्मी, 4 सैनिक, मुख्य जिला अधिकारी और 2 सब-इंस्पेक्टर मारे गए। पी.एल.ए. की टुकड़ियों ने जिला प्रशासन कार्यालय, जिला पुलिस कार्यालय, भू-राजस्व कार्यालयों, जुमला एयरपोर्ट टॉवर और हथियारबंद पुलिस बल की एक बैरक और क्षेत्रीय पुलिस ईकाई में आग लगा दी। इन कार्रवाइयों के दौरान बैंक पर हमला बोलकर वहां से पी.एल.ए. ने 21 लाख रुपए नकद और 17 लाख की सम्पत्ति बरामद की। इसके बाद बैंक को आग लगा दी गई। इस छापे में पी. एल.ए. को बड़ी तादाद में हथियार और गोला-बारूद मिले। उन्होंने जिला कारागार को भी तोड़ दिया। **गौरतलब है कि यह पहला मौका है जब पी.एल.ए. एक क्षेत्रीय मुख्यालय पर हमला करके उस पर कब्जा जमाने में कामयाब हुई है।** अब तक पी.एल.ए. ने डोलपा स्थित डुनाई, श्यांगजा स्थित श्यांगजा, सोलूखुम्बू स्थित सालेरी, डांग स्थित घोरही, अच्छम स्थित मंगलसेन, अरगाखांची जिला स्थित सांधीखरका जैसे जिला मुख्यालयों पर हमला किया है और उन्हें सफलतापूर्वक अपने कब्जे में लिया है।

उसी दिन पी.एल.ए. की टुकड़ियों ने गोरखा जिले में स्थित टाकूकोट पुलिस चौकी पर भी हमला किया। यह इलाका मौजूदा राजा का प्राचीन गढ़ रहा है। इस हमले में 24 पुलिसवाले मारे गए और बहुत सारे दूसरे लोग घायल हुए। पी.एल.ए. की टुकड़ियों ने 37 राइफलें जब्त कीं। गौरतलब है कि यह कामयाब हमला इस जिले में भारी सैनिक जमावड़े की मौजूदगी में अंजाम दिया गया था। इसके बाद 4 दिसम्बर को नेपाल के पूर्वी इलाके में लाहान नामक स्थान पर हमला किया गया। इस इलाके में क्षेत्रीय पुलिस कार्यालय और स्थानीय बैंक को निशाना बनाया गया।

हाल ही में सम्पन्न केंद्रीय समिति की बैठक में सी.पी.एन. (माओवादी) ने इस बात की तस्दीक की है कि अब पार्टी रणनीतिक संतुलन की पिछली अवस्था से आगे बढ़कर रणनीतिक आक्रमण की तैयारी के चरण में दाखिल हो गई है। केंद्रीय समिति का यह निर्णय इस बारे में बहुत कुछ कहता है कि जनता की शक्ति का हथियारों और गोला-बारूद के किसी भी जखीरे के सहारे मुकाबला नहीं किया जा सकता है। भूख की मिसाइल अगर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की शक्ति से दागी जाए तो कोई भी मिसाइल उसका मुकाबला नहीं कर सकती! ❖

भांसी के नजदीक पीजीए का हमला - विस्फोटक सामग्री जब्त

भांसी से 2 किलोमीटर दूर पर स्थित ग्राम दूरली के पास एक निजी कम्पनी (शारदा क्रषिंग प्लान्ट) के विस्फोटकों के गोदाम पर पीजीए सैनिकों ने 12 फरवरी की रात को हमला किया। वहां मौजूद विस्फोटक सामग्रियों को जब्त करने के इरादे से किए गए इस हमले में पीजीए के मुख्य बल और आधार बल के लगभग 100 सैनिकों ने भाग लिया। उन्होंने उस समय वहां मौजूद दो चौकीदारों को अपनी हिरासत में लिया और वहां से 175 किलो जिलेटिन (विस्फोटक), 1275 एलक्ट्रिकल डिटोनेटर, 25 ऑर्डिनरी डिटोनेटर और 40 मीटर फ्यूज वायर जब्त कर लिया। हमले के बाद उन्होंने चौकीदारों को छोड़ दिया। इस हमले ने पुलिस अधिकारियों को हिलाकर रख दिया क्योंकि उस समय भांसी से कुछ ही दूर पर स्थित एक कस्बे में गुप्तचर विभाग के आला अधिकारी मुकाम किए हुए थे। उन्हें इस हमले के सम्बन्ध में कोई भनक तक नहीं लगी। अगली सुबह 8 बजे तक इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। ❖

गुजरात की प्रेरणा से तेजी से फैलता हिन्दू फासीवाद

गुजरात के चुनाव से पूर्व, राज्यों में हुए सभी विधानसभा चुनावों में भाजपा को मुंह की खानी पड़ी। जिन राज्यों में वह पहले सत्ता पर रही, वहां उसे सत्ता से हाथ धोना पड़ा। इसके बावजूद कि केन्द्र में भाजपा नेतृत्व वाली राजग सरकार बरकार रही हो, भाजपा की सत्ता वाले राज्यों में हुए चुनावों में उसे सत्ता के सुख से वंचित होना पड़ा। अपवाद स्वरूप उसे सिर्फ उत्तर प्रदेश में बसपा के साथ सत्ता बांटने का मौका मिला, लेकिन वह भी अवसरवादी तिकड़मबाजी के बल पर। इससे उसने पहले की तरह चुनावों में धार्मिक साम्प्रदायिकतावाद और राम जन्मभूमि विवाद को उछालने की रणनीति अपनाने में हिचकिचाहट करना शुरू किया। कुछ अखबारों ने यहां तक कि राम जन्मभूमि विवाद की तुलना सूखी नदी से की।

पर 27 फरवरी 2002 को हुए गोधरा काण्ड और उसके बाद बड़े पैमाने पर भड़काए गए हिन्दू धर्मोन्माद के बल पर गुजरात में भाजपा को आशातीत सफलता मिल गई। इससे हत्यारा नरेन्द्र मोदी एक ही झटके में भाजपा का राष्ट्रीय नायक बन गया। आरएसएस गिरोह के सभी संगठन मोदी की प्रशंसा का पुल बांध रहे हैं। साथ ही, संघ गिरोह ने देश भर में हिन्दू साम्प्रदायिकतावाद को भड़काना शुरू किया। गुजरात के चुनावों में हिन्दू धर्मोन्माद के नतीजे ने उन्हें नई प्रेरणा दी। चुनावी नतीजों ने जहां संघ गिरोह को उत्साहित किया, वहीं कांग्रेस को भयभीत कर दिया। बाकी झूठी धर्मनिरपेक्ष पार्टियों को भी शर्मिंदगी झेलनी पड़ी।

गुजरात चुनावों के बाद संघ गिरोह ने खुलेआम घोषणा की कि वे गुजरात नमूने को देशभर में लागू करेंगे। इसका मतलब यह है कि जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां पर साम्प्रदायिक दंगे भड़काकर मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों को खड़े पैमाने पर कत्ल किया जाएगा। हिन्दू साम्प्रदायिक उन्माद को भड़काकर, उससे वोट बटोरने की कोशिश करेंगे। इसके तहत संघ गिरोह ने कई मनगढ़न्त कहानियां गढ़ना शुरू किया ताकि साम्प्रदायिक दंगों को भड़काया जा सके। खासतौर पर जिन राज्यों में शीघ्र ही चुनाव होने वाले हैं, वहां वह साम्प्रदायिक दंगों को भड़काने के लिए आवश्यक विवादों को पैदा करने के प्रयास कर रहा है। इस साजिश के तहत ही विश्व हिन्दू परिषद (विहिप), बजरंग दल, आदि संघ गिरोह के संगठनों ने संबंधित राज्यों में पुरानी "कब्रों" को खोदना शुरू किया।

गुजरात में चुनावी जीत के बाद विहिप ने बड़े पैमाने पर राम लीला के आयोजन करके साम्प्रदायिक उन्माद को भड़काना शुरू किया। इसके साथ-साथ देशभर में कई स्थानों पर त्रिशूल दीक्षा के आयोजन कर, त्रिशूल बांटकर मुसलमानों पर हमलों के लिए उकसा रहा है। इसी को भाजपा नेता 'सांस्कृतिक राष्ट्रीयवाद' का नाम देकर अल्पसंख्यकों के खिलाफ हमलों की योजनाएं रच रहे हैं। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और उडीसा में विहिप, बजरंग दल आदि संघ गिरोह के संगठन अपनी-अपनी धर्मोन्मादी गतिविधियों को सुनियोजित ढंग से बढ़ा रहे हैं।

गुजरात के चुनावों के बाद संघ गिरोह धार्मिक उन्माद को भड़काने लग गया तो खुद को धर्मनिरपेक्ष बताने वाली पार्टियों ने हिन्दू फासीवाद का मुकाबला करने की कोई कोशिश नहीं की। गुजरात के चुनाव के मौके पर कांग्रेस पार्टी ने मुस्लिमों पर हुए हत्याकाण्ड का खुलकर और हिम्मत के साथ विरोध नहीं किया। वह मुसलमानों से मिलने से भी कतराती रही। वाघेला ने भाजपा की ही तरह हिन्दू साम्प्रदायिकतावाद का इस्तेमाल करने की कोशिश की। गुजरात के चुनाव के बाद तो वह तुतलाते हुए भी हिन्दू धर्मोन्माद का विरोध नहीं कर सक रही है। तेलुगुदेशम, त्रृणमूल कांग्रेस, डीएमके जैसी राजग की घटक पार्टियां पूर्व में संघ गिरोह के हिन्दू धर्मोन्माद का विरोध करने का अभिनय किया करती थीं ताकि मुसलमानों और धर्मनिरपेक्षों के वोटों को न गंवाया जा सके। गुजरात के चुनावों के बाद तो जैसे इनके मुंह पर ताला ही लग गया हो। इन पार्टियों ने हिन्दू फासीवाद का मूक समर्थन करना शुरू किया। अपने तेवर बदल रहे हिन्दू फासीवाद का मुकाबला करने के लिए संशोधनवादी पार्टियों ने भी खास कुछ नहीं किया, सिवाए दिखावे के।

अब कांग्रेस पार्टी ने हिन्दू साम्प्रदायिकतावाद का विरोध करने की अपनी नौटंकी बन्द करके खुद ही हिन्दू धर्मोन्माद को एक चुनावी चाल के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया है। हालांकि यह सिलसिला गुजरात चुनाव के पहले से ही शुरू हो चुका है, लेकिन गुजरात चुनाव के बाद से कांग्रेस दूसरे राज्यों में हिन्दू कार्ड का खुलकर इस्तेमाल करने लगी है। वह हिन्दू धर्मोन्माद को अपनी चुनावी रणनीति का हिस्सा बना चुकी है। इसके तहत छत्तीसगढ़ में ईसाई-आदिवासी मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने राम लीला के आयोजन शुरू किए। राम जत्थों का निर्माण कर राम के आदर्शों का प्रचार शुरू करवाया। वह इस तरह एक तरफ धार्मिक साम्प्रदायिकतावाद का इस्तेमाल करते हुए दूसरी तरफ विभिन्न जातियों को गोलबन्द कर रहा है। मराठी समाज, जैन समाज और ब्राह्मण समाज प्रीति भोजों के आयोजन में मशगूल है वह।

इधर, मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने यह सारी तिकड़मबाजी जोगी से काफी पहले ही शुरू कर दी। दलित घोषणा से लेकर शंकराचार्य के पांव दबाने तक कई भूमिकाएं उसने निभाईं। कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों की इन हिन्दुत्ववादी गतिविधियों के पीछे कांग्रेस की आला कमान की मंजूरी है। इतना ही नहीं, कांग्रेसी नेताओं ने यह भी घोषणा की कि वे भी भाजपा के हथियार का ही इस्तेमाल करेंगे ताकि उसे हराया जा सके।

इससे विहिप और भी भड़क गया मध्यप्रदेश के धार में गुजरात जैसा प्रयोग शुरू किया। सदियों पुराने हिन्दुओं और मुस्लिमों के पूजा स्थल भोजशाला को लेकर उसने नए सिरे से विवाद खड़ा कर दिया। विहिप इसे 'राम जन्मभूमि' जैसा देख रहा है। 18 फरवरी को विहिप ने वहां दंगा-फसाद भी शुरू किया। दिग्गी के हिन्दुत्व अनुकूल नीतियों का फायदा उठाकर ही विहिप ने उग्र हिन्दुत्व को सामने लाया। दिग्विजय सिंह ने भोजशाला को भारतीय पुरातत्त्व विभाग की सम्पत्ति करार देकर पूरे विवाद को केन्द्र सरकार को सुपुर्द करने का ऐलान किया। इसी को कहते हैं – "डंडा भी न टूटे और सांप भी न मरे"।

गोमांस के मामले में भी कांग्रेस पार्टी ने जो नीति अपनाई वह हिन्दू धर्मोन्माद को ही बढ़ावा देती है। संघ गिरोह के संगठनों की कोशिश यह है कि गोमांस और गौहत्या को विवादास्पद बनाकर कुछ जन समुदायों

और अल्पसंख्यकों पर हमला किया जाए। कांग्रेस पार्टी ने इसका विरोध करने के बजाए, इसे बल देने वाली जवाबी रणनीति अपनाई। कांग्रेस ने मांग की कि चूंकि भाजपा के सत्ता में आने के बाद ही गोमांस का निर्यात और आयात बढ़ चुका है, इसलिए वह इस पर स्पष्टीकरण दे। उसने यह भी प्रचारित किया कि वाजपेयी ने भी गोमांस खाया। इस पूरे प्रकरण में कांग्रेस ने जो भूमिका निभाई उससे भाजपा के हिन्दुत्व की नीतियों को ही मदद मिलती है। बाकी पार्टियों ने अपनी-अपनी चुनावी रणनीति के तहत चुप्पी साध ली। सभी तथाकथित धर्मनिरपेक्ष पार्टियों ने गोमांस सेवन को विवादास्पद बनाने वाले हिन्दू धर्मोन्माद का मुकाबला करने से कन्नी काट ली।

धर्म एक नशा है। धर्म एक साधन है जिसे लुटेरे वर्ग अपने हितों के मद्देनजर इस्तेमाल करते हैं। वे इसे फासीवाद के रूप में तब्दील करके उत्पीड़ित जनता के संघर्षों को कुचलने की कोशिश करते हैं। कोई भी शोषक वर्ग धार्मिक उन्माद या साम्प्रदायिकतावाद के खिलाफ नहीं चलता। वे धर्म को जब जैसे जरूरी होगा वैसे इस्तेमाल करते हैं। इसलिए हिन्दू धर्मोन्माद का शिकार हो रहे अल्पसंख्यकों और अन्य सच्चे धर्मनिरपेक्षतावादियों और जनतंत्र के प्रेमियों को लुटेरे शासक वर्गों की असलियत को सही तरीके से पहचानना होगा। इसकी जरूरत अब पहले के मुकाबले ज्यादा बढ़ी है। तभी इस देश की विशाल उत्पीड़ित जनता को हिन्दू फासीवाद के खतरों से अवगत कराया जा सकता है। कांग्रेस समेत सभी किस्म की लुटेरी चुनावी पार्टियों की हिन्दुत्व अनुकूल नीति का पर्दाफाश करेंगे। हिन्दू फासीवाद के खिलाफ व्यापक जनता को गोलबन्द करेंगे। ❖

आदिवासियों के कुल्हाड़ी लेकर बाजार में आने पर प्रतिबन्ध लगाने के सरकार के फैसले का पलटकर जवाब दो !

पिछले दिसम्बर माह में छत्तीसगढ़ सरकार में उद्योग मंत्री महेन्द्र कर्मा ने अपने दन्तेवाड़ा प्रवास के दौरान नक्सलवादियों के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि आदिवासियों के कुल्हाड़ी धारण कर बाजार आने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। उसने यह निर्णय लेना इसलिए जरूरी कहा कि आदिवासियों के वेष में नक्सलवादी कुल्हाड़ी लेकर बाजारों में आ रहे हैं और पुलिस वालों की हत्या कर रहे हैं। उसका मानना है कि इस फैसले से नक्सलवादियों को पुलिस वालों पर हमला करने का मौका नहीं मिलेगा। नक्सलवादी कारों में जाकर भी पुलिस वालों पर हमला कर रहे हैं – तो क्या सरकार कारों पर प्रतिबन्ध लगाएगी? यह सिर्फ एक बहाना है, बल्कि इसके पीछे सरकार की बहुत बड़ी साजिश है।

आदिवासी परम्परागत रूप से सदियों से छुरा, तीर-धनुष, कुल्हाड़ी, बरछी जैसे परम्परागत हथियारों को धारण करते आ रहे हैं। हथियार के बिना आदिवासियों का अस्तित्व ही नहीं हो सकता। जंगल में खूंखार जानवरों से खुद को और अपनी फसलों को बचाने के लिए उन्हें हथियार पास रखना जरूरी है। इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है कि जब-जब आदिवासियों के अस्तित्व को शोषकों और शासकों से कोई खतरा पैदा हुआ तब आदिवासियों ने अपने इन्हीं परम्परागत हथियारों से बगावत का परचम फहरा दिया।

जब से बस्तर क्षेत्र में क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रसार हुआ बस्तर के आदिवासी अब दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते पर चलने लगे हैं। पीपुल्सवार पार्टी शुरू से ही जनता को गोलबन्द करते हुए उन्हें सशस्त्र बनाने की जरूरत पर जोर देते आ रही है। बस्तर के सैकड़ों आदिवासी युवक-युवतियों ने हथियारबन्द होकर इस लुटेरी व्यवस्था के खिलाफ बगावत का नारा बुलन्द किया। आज पीजीए, जोकि जनता की अपनी सेना है, बस्तर के युवा वर्ग के सामने मुक्ति का एक मात्र विकल्प के रूप में उभरी है। हजारों नौजवान जन मिलिशिया, जोकि पीजीए का आधार बल है, में शामिल हो चुके हैं। बढ़ती पीजीए की ताकत से शासक वर्ग खफा है।

जबसे पीजीए की स्थापना हुई और पार्टी की 9वीं कांग्रेस सम्पन्न हुई, तबसे पीजीए की हथियारबन्द कार्यवाहियों की संख्या एवं तीव्रता में जबर्दस्त बदलाव आया है। दण्डकारण्य को मुक्तांचल बनाने के लक्ष्य से जनता कदम बढ़ा रही है। जनता की बढ़ती चेतना और उसकी संघर्षशीलता को कुंद करने के लिए शासक वर्ग हर चंद कोशिशें कर रहे हैं। इस साजिश के तहत ही उन्होंने जनता को निष्क्रिय बनाने के उद्देश्य से कुल्हाड़ी धारण पर प्रतिबन्ध लगाया है। जनता पर दमन और जुल्म बेरोकटोक चलाने के लिए उनकी ताकत को नष्ट करना चाह रहे हैं।

जहां तक हथियारों के प्रयोग का सवाल है, पुलिस वाले अपनी लाठियां, बन्दूकें, गोलियां किनके खिलाफ इस्तेमाल करते हैं – यह बात सभी को मालूम है। गरीब, बेबस और बेसहारा लोगों के खिलाफ ही पुलिस बल अपने हथियारों का प्रयोग करते हैं। जनता पर लुटेरे वर्गों द्वारा जारी शोषण-लूटपाट को बनाए रखने का काम ही वे करते हैं। जबकि आदिवासी अपने हथियारों का प्रयोग अपनी रक्षा के लिए ही करते हैं। इसलिए, जब जनता को लूटने वाले हथियार रख सकते हैं तो जनता भी अपने पास हथियार रखेगी। यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है।

'दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी' बस्तरवासियों का आह्वान करती है कि परम्परागत हथियार धारण करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार का हनन करने के लिए शासक वर्गों और उनके भाड़े के पुलिस बलों द्वारा की जा रही कोशिशों का पलट कर जवाब दें। हाट बाजारों में सामूहिक रूप से कुल्हाड़ी लेकर जाएं। जो पुलिस वाला आपकी कुल्हाड़ी छीनने की कोशिश करेगा, उसका मुकाबला करें। पहले से पुलिस द्वारा जब्त की गई कुल्हाड़ियों को लौटाने की मांग करें। आशा है कि बस्तर की जनता पुलिस के इस अभियान को भी उसी तरह मात देगी, जैसे अब तक कई बार कर चुकी है। हम जनवाद-पसन्द लोगों और बुद्धिजीवियों से अपील करते हैं कि बस्तरवासियों के इस जायज संघर्ष का समर्थन करें। ❖

2 दिसम्बर

पीजीए को राजनीतिक और फौजी तौर पर मजबूत करो !

गांव-गांव में जन मिलिशिया का गठन कर उसे एक अभेद्य शक्ति के रूप में बदल दो !!

★ अपनी दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर पीजीए की शानदार कार्रवाइयां ★ बड़े पैमाने पर सभा-सम्मेलनों का आयोजन ★
★ शहीद नेता कॉ. श्याम, कॉ. मुरली और कॉ. महेश को जगह-जगह श्रध्दांजलि ★
★ शासक वर्गों में खलबली - उनके सशस्त्र बलों की नींदें उड़ीं ★

2 दिसम्बर अब भारत के क्रांतिकारी इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन बन चुका है। यह दिन नजदीक आते ही अब लुटेरे शासक वर्ग और उनके भाड़े के सशस्त्र बल चैन की नींद सो नहीं पा रहे हैं। यह दिन नजदीक आते ही पीजीए के तीनों बलों के हजारों योद्धा अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में दुश्मन के बलों पर हमले की योजनाओं में जुट जाते हैं। इस वर्ष क्रांतिकारी जनता ने इस दिन का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया है। उसकी अपनी सेना की कामयाबियों पर जश्न मनाया है। पार्टी के समूचे कतारों ने पिछले एक साल में पीजीए को मिली सफलताओं और असफलताओं का जायजा लेकर पीजीए को एक अपराजेय ताकत के रूप में उभारने का संकल्प लिया है। और इस अवसर पर समूची पार्टी, पीजीए के तमाम बल और क्रांतिकारी जनता ने पीजीए की दूसरी वर्षगांठ मनाने के साथ-साथ हमारे प्यारे नेता कॉ. श्याम, कॉ. महेश और कॉ. मुरली की बहादुराना शहादत की तीसरी बरसी भी मनाई।

पार्टी के केन्द्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) ने आह्वान किया था कि पीजीए की दूसरी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 2 से 8 दिसम्बर तक 'पीजीए सप्ताह' मनाया जाए और इस मौके पर वर्ग दुश्मनों पर तथा उनके भाड़े के सशस्त्र बलों पर ताबड़तोड़ हमले किए जाएं। इस आह्वान पर दण्डकारण्य के सभी डिवीजनों में पीजीए ने कई हथियारबन्द कार्यवाहियां कीं। पीजीए सप्ताह को सफल बनाने वाले पीजीए योद्धाओं और क्रांतिकारी जनता का 'दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी' क्रांतिकारी अभिनन्दन करती है। इस अवसर पर हम पश्चिम बस्तर डीविजन के भद्राकाली के निकट गलती से पीजीए के हमले के चपेट में आकर जान गंवाने वाले शिक्षक श्री नारायण की मौत के प्रति गहरा दुख प्रकट कर रहे हैं। इस कार्रवाई में एक अन्य शिक्षक घायल हुए। इन दोनों शिक्षकों के परिवारों के प्रति हम संवेदना प्रकट कर रहे हैं। और हम वादा करते हैं कि आइंदा ऐसी गलतियां न हों, इसकी पूरी एहतियात बरतेंगे। पेश है विभिन्न डिवीजनों से हमारे पास पहुंची रिपोर्टों का संक्षिप्त लेखा-जोखा –

दक्षिण बस्तर डिवीजन

यह 1 और 2 दिसम्बर की आधी रात का समय था। दक्षिण बस्तर में पी.जी.ए. सप्ताह का उद्घाटन पामेड़ और चिंतलनार पुलिस स्टेशनों पर मिलिशिया के हमलों के साथ हो गया। पी.जी.ए. सप्ताह शुरू होने के 1 घण्टे के भीतर 2 दिसम्बर को रात 1 बजे हमले की शुरुआत की गयी।

पामेड़ में 130 से अधिक मिलिशिया लड़ाकों ने भरमारों, साबुन (soap) बम और खाड़ा सुरंगों (claymore mines) के ज़रिए पुलिस थाने पर चार दिशाओं से हमला किया। यहां का पुलिस थाना गांव के बीचोंबीच स्थित है। यह गांव 200 घरों वाला एक रेंज केंद्र है। इस पुलिस थाने और कैम्प में 70 से अधिक हथियारबंद पुलिस वाले रहते हैं। मिलिशिया ने इस हमले के बारे में काफी समय पहले ही योजना तैयार कर ली थी।

1 दिसम्बर की रात को 10 बजे उन्होंने 4 टुकड़ियां बना लीं और अलग-अलग दिशाओं में बंट गए। गांव में घरों और ऑफिसों के पीछे छिपते हुए उन्होंने ठीक 1 बजे हमला शुरू कर दिया। दोनों तरफ से 4 घंटे तक लगातार गोलीबारी चलती रही। घबराए पुलिस वाले थाने से बाहर निकलने का साहस नहीं जुटा पाए और मिलिशिया के चले जाने के बाद भी आधे घंटे तक फायरिंग करते रहे। पुलिस को सुबह पौ-फटने पर ही अहसास हुआ कि यह हमला किसी स्क्वाड ने नहीं बल्कि सशस्त्र लोगों ने किया था।

उसी समय एक और कार्रवाई चिंतलनार पुलिस थाने पर की गई। चिंतलनार गांव पामेड़ से सिर्फ 30 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां भी पुलिस थाना गांव के बीचोंबीच स्थित है और उसमें 60 हथियारबंद पुलिसकर्मी तैनात हैं। अगले दिन स्थानीय मीडिया में खबर छपी कि मिलिशिया ने थाने पर कुछ खाड़ा सुरंगों और साबुन बमों से विस्फोट किया। परंतु पुलिस फिर भी तकरीबन 2 घंटे तक फायरिंग करती रही। 2 दिसम्बर की अगली रात को ही एल.जी.एस. (लोकल गुरिल्ला स्क्वाड) और मिलिशिया के लगभग 40 योद्धाओं ने पुलिस थाने पर गोलियां चलाईं जिसमें एक पुलिसकर्मी घायल हो गया। हालांकि हमला

दक्षिण बस्तर में पीजीए योद्धाओं द्वारा मार्चिंग

दक्षिण बस्तर के ग्राम दुब्बामरका में आयोजित एक सभा

केवल 20 मिनट तक ही किया गया परंतु दूसरी तरफ से पुलिस ने 3-4 घंटे तक फायरिंग करना जारी रखा।

2 दिसम्बर और 4 दिसम्बर के बीच चिंतागुपा, मराईगुड़ा और किष्टारम के पुलिस थानों पर भी इसी तरह के हमले हुए। इन तीनों पुलिस थानों में लगभग 60- 60 पुलिस वाले तैनात हैं। ये हमले पुलिस को परेशान करने के उद्देश्य से किए गए थे।

परंतु दक्षिण बस्तर में पी.जी.ए. सप्ताह के हिस्से के तौर पर सबसे असरदार सामूहिक हमला कोंटा तहसील के जगुरगोंडा गांव में बोला गया। ये इस इलाके का सबसे बड़ा गांव है और इसमें 500 घर हैं। यह रेंज सेंटर और शत्रु का एक प्रमुख गढ़ है। पुलिस थाने के अलावा यहां वन विभाग के कार्यालय और क्वार्टर भी बने हुए हैं। 4 दिसम्बर की रात को आस-पास के 20 गांवों के लगभग 1,000 लोग जगुरगोंडा के बाहर इकट्ठा हुए। इन लोगों ने पीजीए का बैज पहन रखा था। इस विशाल जनसमूह के आगे खुद मिलिशिया के लोग थे। इस सामूहिक कार्यवाही में किसान संगठन के सदस्य और लगभग 300 महिलाएं भी शामिल थीं। सबसे पहले उन्होंने पुलिस थाने के पास जाकर वहां खाड़ा सुरंग का एक विस्फोट किया। इस हमले से भयभीत पुलिस वाले पुलिस स्टेशन के भीतर जा छिपे। इसके बाद 1,000 लोगों का यह समूह कुल्हाड़ी, छड़ों, पत्थरों और सामने आयी किसी भी चीज के सहारे 2 घंटे तोड़-फोड़ अभियान चलाता रहा। 2 घंटे के भीतर पंचायत कार्यालय, वन-विभाग कार्यालय और उनके क्वार्टर मिट्टी में मिल चुके थे। लोगों ने दफ्तरों और घरेलू इस्तेमाल की तमाम चीजें अपने कब्जे में ले लीं और उन्हें आपस में बांट लिया। जगुरगोंडा के लोगों ने इस कार्यवाही को देखा और उसका स्वागत किया। 2 घंटे की पूरी कार्रवाई के दौरान एक भी पुलिसकर्मी बाहर आने की हिम्मत नहीं जुटा सका। यह कार्रवाई आधार क्षेत्र निर्मित करने की प्रक्रिया में शत्रु की ताकत को तबाह करने के लिए चलाए जा रहे एक शैक्षणिक अभियान का एक हिस्सा थी।

5 मिलिशिया सदस्यों की एक एक्शन टीम ने मल्लमपेट (आन्ध्र) के आरएसआई पर हमला किया। उसका सफाया करने में सफलता नहीं मिली, पर वह घायल हो गया। ग्राम तोंगूडेम और पामेड के बीच पीजीए के तीनों बलों के 20 सदस्यों ने पुलिस वालों के एक दुपहिया वाहन पर हमला बोल दिया, लेकिन वे इस हमले से बाल-बाल बच गए। फिर भी इस हमले ने पुलिस के मनोबल को और भी नीचे कर दिया। वे अभी अकेले में कहीं निकलने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहे हैं।

इन कार्रवाइयों के अलावा 2 दिसम्बर को तमाम गांवों में पी.जी.ए. का झंडा भी फहराया गया, जुलूस निकाले गए और उत्सवों का आयोजन किया गया। 20 गांवों में भर्ती अभियान भी चलाया गया। पीजीए की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर पूरे डिवीजन में 38 प्रचार दलों ने व्यापक प्रचार अभियान चलाया। 3,000 पर्चे बांटे गए और सैकड़ों बैनर-पोस्टर लगा दिए गए। हर गांव में पहले गांव स्तर की बैठक आयोजित की गई। उसके बाद बड़े पैमाने पर आयोजित सभाओं में लोगों ने उत्साह के साथ बाग लिया। कोंटा एरिया में 6, किष्टारम एरिया में 3 और बासागूडेम एरिया में 9 बड़ी सभाएं हुईं, जिनमें हजारों लोगों ने भाग लिया।

उत्तर बस्तर डिवीजन

पीजीए की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर उत्तर बस्तर के कोयलीबेड़ा एरिया में कुल 19 कार्रवाइयां की गईं। इसमें 7 पंचायत भवन, 3 पटवारी भवन, 3 रेस्ट हॉउस, 2 थाना, 1 गांधी का मुर्ति और एक जनपद सदस्य के मकान को ध्वस्त किया गया। इन सभी घटनाओं में कुल 755 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

4 दिसम्बर को कोयलीबेड़ा थाना के ऊपर 14 मिलिशिया सदस्यों ने फॉयरिंग की। पुलिस डरकर रात भर बेकार फॉयर करते रहे।

4 दिसम्बर को ही कोयलीबेड़ा पुलिस 2 दिन के गश्त पर निकली हुई थी। मिलिशिया योद्धाओं ने कड़मे नाला पर एम्बूश की। पुलिस दुम दबाकर भाग गए।

5 दिसम्बर के तड़के पीजीए के आधार बल के दो सैनिकों ने रावघाट थाने के नजदीक पुलिस वालों पर घात लगाकर हमला किया। पुलिस वाले शौच के लिए जा रहे थे तब यह हमला किया। इस हमले में एक पुलिस वाला घायल हुआ और बाकी पुलिस वाले भाग खड़े हुए। बाद में उन्होंने थाने के भीतर से बेकार गोलीबारी की। इस हमले के बाद पुलिस ने थाने के चारों ओर मौजूद पेड़ों को कटवाया क्योंकि

जनता का कट्टर दुश्मन होमगॉर्ड मुकेश का सफाया

पश्चिम बस्तर डिवीजन के फरसेगढ़ में होमगॉर्ड कुरसम मुकेश को पीजीए ने अपनी वर्षगांठ के दिन – 2 दिसम्बर को खत्म कर दिया। यह '92 से होमगॉर्ड का काम कर रहा था। यह अंदर के गांवों में आकर पार्टी और छापामारों सम्बन्धी सूचना इकट्ठा करता था। इसकी दी सूचना के आधार पर पुलिस ने ग्राम नेल्लिमड्डुगु में हमला करके गांव में रखे क्रांतिकारी साहित्य और अन्य सामान लूट लिए थे। गांव के कुछ लोगों को गिरफ्तार कर खूब यातनाएं देकर जेल भेज दिया। इस दुश्मन का सफाया करने के पार्टी के फैसले पर पीजीए की एक एक्शन टीम ने पीजीए की दूसरी वर्षगांठ के दिन अमल कर दिया। मुकेश का घर थाने से सिर्फ 200 गज की दूरी पर था। वह जब खाना खाकर सायकिल पर जा रहा था तब 5 मिलिशिया सदस्यों की टीम ने कुल्हाड़ी, छुरा जैसे परम्परागत हथियारों से उसका काम तमाम कर दिया। इस कार्यवाही से जनता में खुशी की लहरें दौड़ गईं।

थाने की मजबूत किलेबंदी से भी वह सुरक्षित महसूस नहीं कर रही है।

कड़मे रेज में पीजीए दिवस के दिन केएएमएस सदस्य कामरेड रामबाई के अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन हुआ। इस सभा में कुल 80 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

प्रतापुर रेंज के ग्राम कुली में कोयलीबेड़ा दस्ते के नेतृत्व में एक सभा का आयोजन हुआ। रेंज कमेटी सदस्या कॉ. रामबाई ने झण्डा फहराकर सभा का शुभारंभ किया। इस सभा में कुल 621 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

2 दिसम्बर काकनार एलजीएस एरिया के ग्राम हिदहुर में आयोजित सभा में 25 गांवों से कुल 500 जनता शामिल हुई। इस सभा को रेंज कमेटी सदस्य कॉ. बेनाड़ ने सम्बोधित किया।

माड़ डिवीजन

पीजीए सप्ताह के अवसर पर इन्द्रावती एरिया के पीजीए योद्धाओं ने ओरछा ब्लॉक कार्यालय का विस्फोट से उड़ा दिया। 4 दिसम्बर को हुई इस कार्यवाही में गौण व आधार बल के दर्जनों सैनिकों ने भाग लिया।

इसी क्षेत्र में तीन जमींदारों के घरों पर भी पीजीए ने हमला किया। इन जमींदारों से 1150 क्विन्टल धान, 4 भरमार बन्दूकें, 8 बैल, 3 भैंसें छीन ली गईं। इनसे 50 एकड़ जमीन भी छीनकर भूमिहीनों में बांट दिया गया। इन हमलों की अगुवाई 140 मिलिशिया सदस्यों ने की जिनमें 60 महिलाएं शामिल थीं। कुल 3,000 स्त्री-पुरुषों ने इन हमलों में भाग लिया। इन हमलों से इस क्षेत्र के सरकारी अधिकारियों और जमींदारों के दिलों में आतंक भर गया। ताकिलोड़ गांव के फूलसिंह और रूपाल तथा ओडसापारा गांव के बासु के घरों पर ये हमले हुए थे।

इन्द्रावती एरिया में पीजीए सप्ताह के दौरान फौजी कार्यवाहियों के अलावा कई जन कार्यक्रम भी हुए थे। इलाके के सभी जन संगठनों ने एक हफ्ता पहले से ही प्रचार अभियान शुरू किया। पोस्टर, बैनर, पर्चे आदि प्रचार सामग्री का इस्तेमाल किया गया।

2 दिसम्बर को ग्राम बोड़गा में एक बड़ी सभा आयोजित की गई। इसमें करीब 2,500 से ज्यादा जनता ने भाग लिया। पीजीए झण्डा उठाकर शहीदों को बन्दूकों से सलामी पेश की गई। बाद में सभा को पीजीए के कमाण्डरों और स्थानीय पार्टी नेताओं ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने जनता की राजसत्ता को मजबूत करने और जन मिलिशिया बलों को बढ़ाकर जनयुद्ध को तेज करने की जरूरत पर जोर दिया। कोलकाल के निकट ग्राम ईकुल में भी एक सभा हुई जिसमें 300 जनता ने भाग लिया। इस सभा की अध्यक्षता एलजीएस कमाण्डर कॉ. स्वप्ना ने की। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि बड़ी संख्या में पीजीए में शामिल होकर दण्डकारण्य को मुक्तांचल में बदलने का कर्तव्य पूरा किया जाए।

पश्चिम बस्तर डिवीजन

पश्चिम बस्तर डिवीजन के मद्देड़ एरिया में पीजीए सप्ताह के दौरान मोदकपाल के फारेस्ट भवन को ध्वस्त किया गया। रात को गश्त पर आई 24 पुलिस वालों ने इस घटना से डरकर मोदकपाल नहीं पहुंचे बीच रास्ते में ही हवा में फॉयर कर वापस चले गए और नक्सलयों से मुठभेड़ हुई कहकर रिपोर्ट दी।

11 दिसम्बर को रात के 1.45 बजे मद्देड़ एरिया के दारावरम के निकट पीजीए ने बीजापुर एस.पी. अमित कुमार और एएसपी वट्टी के काफिले पर हमला किया। लेकिन बारूदीसुरंग को सही वक्त पर विस्फोट न करने के कारण वाहन को उड़ाने में सफलता नहीं मिली। हालांकि वाहन क्षतिग्रस्त हुआ लेकिन पुलिस अधिकारियों को कोई नुकसान नहीं हुआ। जनता में आतंक मचाने में माहिर ये खुंखार अधिकारी खुद इतने आतंकित हुए कि इस हमले के बाद पौ-फटते तक जान हथेली पर रखकर रह गए। इनके साथ रहे 10 सुशिक्षित कमाण्डो सभी अंधेरे में गोली चलाने की हिम्मत ही नहीं की। पौ-फटने के बाद जब अतिरिक्त बल पहुंचा तब उन्होंने बेकसूर जनता पर अपना गुस्सा उतारा। पास के गांव की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का घर जला दिया। कई अन्य घरों में घुस कर सामान को बन्दूकों के कुन्दों से तोड़ दिया। गांव की महिलाओं के साथ भी मार पीट की और भद्दी गालियां दीं।

भूपालपट्टनम-मद्देड़ के बीच बिछाए संचार (टेलीफोन) के तारों को

पुलिस की दिखावटी बहादुरी का एक उदाहरण ...

पीजीए सप्ताह शुरू होने से पहले ही दुश्मन ने दमन अभियान तेज किया था। सैकड़ों पुलिस वालों ने अलग-अलग दलों (25-30 की संख्या में) में बंटकर गांवों जैसे आतंक का ताण्डव मचाया। अपने दमनकारी 'गुण्डाधुर अभियान' के तहत जनता की अन्धान्धुध गिरफ्तारियां कीं। उसका इरादा यही था कि जनता में इस हद तक आतंक मचाया जाए ताकि वह पीजीए सप्ताह में भाग लेने की हिम्मत न कर सके।

लेकिन जनता ने पुलिस दमन को धत्ता बताकर पीजीए सप्ताह में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मद्देड़ एरिया कमेटी की अगुवाई में लोगों ने कई हथियारबंन्द कार्रवाइयों में भाग लेकर पुलिस की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। अब बारी जनता की थी। पुलिस इतनी भयभीत हो गई कि वह फूंक-फूंककर कदम बढ़ाने लग गई। गश्त पर जाने के समय वह जान हथेली पर रखकर चलने लगी। जंगल में पत्तियों की सरसराहट होने पर भी पुलिस वाले जल्दी जमीन पर लेट जाते और सब कुछ ठीक लगने के बाद ही आगे कदम बढ़ाते।

इसी प्रकार 4 दिसम्बर की रात में पुलिस वाले 12 मोटर सायकिलों पर सवार होकर बीजापुर से निकले थे। जब वे मोदकपाल के नजदीक आ गए तब सड़क के किनारे से कोई जानवर के दौड़ने की आवाज सुनाई दी। बस, और क्या होना था! पुलिस को लगा कि वे नक्सलवादियों के एम्बुश में फंस गए। मोटर सायकिलें छोड़ दीं और जमीन पर रेंगते हुए अन्धान्धुध कुछेक गोलियां दाग दीं। वे इतना डर गए थे कि रातोंरात थाना तक भाग गए। अगले दिन अखबारों में यह खबर छपवाई कि नक्सलियों के साथ मुठभेड़ हुई थी, नक्सली भाग गए और वे बहादुरी का प्रदर्शन कर वापिस आ गए। ऐसी खबरों से आन्दोलन के इलाकों से दूर रहने वाली आम जनता को पुलिस जरूर धोखा दे सकती है, लेकिन आन्दोलन वाले इलाकों की जनता अच्छी तरह जानती है कि पुलिस की 'बहादुरी' की असलियत क्या है। ❖

खूंखार मुखबिर हरविलास का सफाया !

हरविलास उत्तर बस्तर डिवीजन के काकनार एलजीएस एरिया के पीवी 52 नम्बर गोंड्हुर गांव में रहता था। यह 1997 से जन-विरोधी काम करता था। 1997 के मई महीने में गड़चिरोली के एट्टापल्ली दस्ते के डिप्टी कमाण्डर कॉ. रामसिंग और दस्ता सदस्य कॉ. विलास ने इस जन दुश्मन को सजा देने के इरादे से उसके घर पर धावा बोला था, तब हरविलास ने धोखे से कुल्हाड़ी लेकर हमारे साथियों पर वार किया था, जिसमें वे दोनों शहीद हुए थे। पुलिस ने इस जन दुश्मन को अपने सिर पर बिठाकर ढेर सारे इनाम दिए। तब से वह पुलिस में शामिल होकर क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ सक्रिय काम करने लगा। पीजीए सप्ताह के दौरान उसे पुलिस ने साधु के वेश में दस्ता की टोह लेने के लिए भेजी थी। उसके आने की जानकारी दस्ता को मिला। 10 दिसम्बर 2002 को उसे सितरम रोड पर पकड़कर मौत के घाट उतार दिया गया।

मिलिशिया ने तबाह कर दिया। जमीन के अन्दर बिछाए जाने वाले इन तारों को नष्ट करने के अलावा इस काम में लगे एक प्रोक्लेइन मशीन को चेरपल्ली के निकट तबाह किया। यहां पर पंचायत भवन को भी इस मौके पर उड़ा दिया।

ग्राम केरपे में मौजूद वन विभाग के भवनों को जनता ने मिलिशिया के नेतृत्व में ध्वस्त किया। केरपे रेंज के गोडामंग्रा गांव में जन संगठनों और जन मिलशिया के नेतृत्व में 450 लोगों ने सशस्त्र जुलूस निकाला। इस जुलूस की खास बात यह रही कि मिलिशिया के 150 लोगों ने अपने कंधों पर मज़ल लोडर बन्दूकें रखकर मार्च किया।

भैरमगढ़ के गंगुलर इलाके में 3 सरकारी सामुदायिक भवनों, पटवारी भवनों, 2 पंचायत भवनों और एक पुलिया को 19 गांवों की 590 जनता ने मिलिशिया की अगुवाई में ध्वस्त कर दिया। मिरतुल इलाके में मिलिशिया ने 7 पंचायत भवनों और एक सामुदायिक भवन को ध्वस्त कर दिया।

गड़चिरोली डिवीजन

गड़चिरोली डिवीजन में पीजीए की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर अलग-अलग एलजीएस एरियाओं में पीजीए के तीनों बलों ने कुल 27 कार्रवाईयां कीं। इसमें घात हमले, पुलिस थानों पर हमले, सामन्तों और जनविरोधियों को सजा और उनके सम्पत्तियों को जब्त करना, सरकारी सम्पत्ति को नष्ट करना आदि शामिल हैं।

एटापल्ली एरिया में पीजीए सप्ताह के दौरान कुल 10 कार्यवाहियां हुईं जिनमें 27 गांवों के 720 लोगों ने भाग लिया। इसके अलावा प्रचार अभियान और अन्य जन कार्यक्रम भी हुए। 13 गांवों के 156 लोगों ने भरमार बन्दूकों से लैस होकर कोका, गोड्सूर और कोटिमि ग्राम पंचायत भवनों को तबाह कर दिया। इन लोगों में मिलिशिया सदस्य भी शामिल थे। इस तरह इन गांवों से लुटेरी सरकार के बुनियादी अंगों के चिह्नों को मिटा दिया गया। दुश्मन के सड़क सम्पर्क को तोड़ने के इरादे से 5-6 गांवों की 72 जनता ने कसन्सूर रोड पर तीन जगहों पर पुलों में तोड़फोड़ की। इसमें इन्हें आंशिक तौर पर नुकसान पहुंचा।

इस दौरान पीजीए सप्ताह को विफल करने के लिए पुलिस ने गश्त तेज कर दी। उसने पीजीए के हमलों से बचने के लिए हर प्रकार के एहतियाती कदम बरते। 1 दिसम्बर को जब 13 पुलिस वाले ग्राम एड्री में मुकाम किए हुए थे, तब 21 मिलिशिया सदस्यों समेत कुल 32 हथियारबंद जनता ने रात के 12.30 बजे धावा बोल दिया। खूब शराब पीकर सो चुके पुलिस वाले इस हमले से इतने घबरा गए कि जमीन पर रेंगते हुए अन्धाधुन्ध गोलियां चलाते रह गए। अगले दिन सुबह 8 बजे तक सैकड़ों गोलियां खर्च करके अखबारों में यह बयान दिया कि पीपुल्सवार के फौजी दस्ते के साथ मुठभेड़ हो गई। लेकिन पुलिस के कायरपन को प्रत्यक्ष देख चुकी जनता ने इसे रद्द कर दिया।

4 दिसम्बर को चामोर्षी एरिया के पोट्टेगांव पुलिस कैम्प पर 11 मिलिशिया सदस्यों ने धावा बोल दिया। वे अपनी भरमार बन्दूकों से एक-एक गोली चलाकर वापिस आ गए। लेकिन पुलिस वाले रातभर बेकार गोलियां चलाते रहे। इस हमले ने सचमुच पुलिस वालों की नींद उड़ाकर रखी।

पीजीए सप्ताह के अवसर पर कुल 5 स्थानों पर आयोजित सभाओं में 15 गांवों के 500 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। इन सभाओं में जनता ने पीजीए के शहीद योद्धाओं को श्रद्धांजलि दी। इन सभाओं में संकल्प लिया गया कि गांव-गांव में जनता की राजसत्ता के अंगों को कायम किया जाए और जनता की नई राजसत्ता की सुरक्षा के लिए युवक-युवतियों को बड़ी संख्या में पीजीए में भर्ती कर लिया जाए।

भामरागढ़ एरिया में 2 पंचायत भवन और एक पुलिया को ध्वस्त किया गया। गट्टा पुलिस थाने पर 7 मिलिशिया सदस्यों ने भरमारों से फायरिंग की। पेरिमिलि एरिया में एक गेस्ट हॉउस और दो बांस डिपुओं को जला दिया गया। कई जगह सरकारी सम्पत्ति को नष्ट कर दिया गया।

अहेरी एरिया के जिमलगट्टा रेंज में मरपल्ली पुलिस कैंप पर पीजीए और जन मिलिशिया सदस्यों ने 16 राउंड फॉयर कर वापस आ गए। पुलिस वाले घबराकर सैकड़ों गोलियां फॉयर करते रहे। इस तरह गड़चिरोली डिवीजन में पीजीए सप्ताह सफलतापूर्वक मनाया गया। ❖

पाठकों से अपील

- **'प्रभात' के लिए भेजी जाने वाली रिपोर्टों को कागज में एक ही तरफ लिखिएगा और मर्जिन जरूर छोड़िएगा। रिपोर्टें अच्छे कागज पर लिखिएगा क्योंकि खराब कागज पर लिखने की वजह से कई रिपोर्टें हमारे पास पहुंचने से पहले ही फट रही हैं। रिपोर्ट जिस घटना/कार्यक्रम से सम्बन्धित है उसके सारे ब्यौरे – यानी घटित तारीख, स्थल, डिवीजन आदि – जरूर लिखें। कृपया इन बातों पर जरूर ध्यान दीजिएगा।**
- **हमारे पास कई सारी तस्वीरें इकट्ठी हो जाने से यह जानने में दिक्कत हो रही है कि कौन-सी तस्वीर कहां की है और किस तारीख की है। इसलिए 'प्रभात' को भेजी जाने वाली हरेक तस्वीर के पीछे यह जरूर लिखिएगा कि वह फोटो किस एरिया/डिवीजन की है, किस कार्यक्रम की है और किस तारीख की है।**
- **'प्रभात' से आप ई-मेल पर भी सम्पर्क कर सकते हैं। ई-मेल का पता है : prabhat_dk@yahoo.com**

- सम्पादकमण्डल

श्रद्धांजलि

आइलापुरम शहीदों को लाल सलाम

सांस्कृतिक योद्धा कॉ. पद्मा (विद्या) जनता के दिलों में जिंदा रहेंगी !

उत्तर तेलंगाना में चन्द्रबाबू की फासीवादी पुलिस ने फिर एक बार क्रांतिकारियों की सामूहिक हत्या की। 17 नवम्बर 2002 को सुबह के 10 बजे वरंगल जिले के अइलापुरम के जंगलों में पुलिस वालों ने छापामारों के मुकाम को घेरकर अन्धाधुन्ध गोलियां बरसाईं। इस गोलीबारी में जन नाट्य मण्डली (जेएनएम) नेता कॉ. विद्या (पद्मा) समेत कुल पांच कॉमरेड शहीद हो गए। अन्य शहीद थे – जेएनएम नेता कॉ. धर्मन्ना (श्रीकांत) जेएनएम सदस्य कॉ. रवी, स्थानीय दस्ता सदस्य कॉ. सुधाकर (कुमार) और कॉ. दुर्गा (रजिता)। 'दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी' इन सभी कॉमरेडों को श्रद्धांजलि पेश करती है और उनके अधूरे मकसद को पूरा करने के लिए लड़ाई जारी रखने का संकल्प लेती है।

कॉ. विद्या पिछले 19 सालों से क्रांतिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन से जुड़ी हुई थीं। उनका जन्म करीमनगर जिले के ग्राम कनुकुलागिद्दा में हुआ था। 19 साल पहले वह अपना घर छोड़कर जेएनएम की केन्द्रीय टीम की सदस्या बन गई। अपनी सुरीली आवाज के लिए जाने जाने वाली कॉ. विद्या ने सैकड़ों सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। देश के कोने-कोने में कई जगहों पर उन्होंने अपने प्रदर्शन से जनता के दिलों में अपनी छाप छोड़ दी। सांस्कृतिक आन्दोलन के मशहूर नेता कॉ. संजीव से उनकी शादी हुई और दोनों ने मिलकर कई गीत गाए और प्रदर्शन दिए। हाल ही में अपने 30 वर्ष पूरे कर चुके जेएनएम के इतिहास में कॉ. विद्या का जबर्दस्त योगदान रहा। एक खुली कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए कॉ. विद्या को कई बार पुलिस दमन का शिकार होना पड़ा। कई बार उन्हें जेएनएम टीम के साथ गिरफ्तार किया गया और उन्हें कई यातनाओं से गुजरना पड़ा।

1985 के बाद से जेएनएम को खुले तौर पर रहते हुए काम करने की इजाजत नहीं दी गई। तत्कालीन एनटीआर सरकार ने जनता की बोली, गीत और नाच पर अघोषित पाबन्दी लगाई थी। उस दौरान जेएनएम को भूमिगत होना पड़ा। 1990 में चेन्नारेड्डी सरकार के दौरान शासक वर्गों में चल रहे अन्तरविरोधों की पृष्ठभूमि में जेएनएम को फिर से एक-डेढ़ साल तक खुले तौर पर काम करने का मौका मिल गया। इस मौके का फायदा उठाकर राज्य भर में दिए गए अनेक सांस्कृतिक प्रदर्शनों में कॉ. विद्या का योगदान अविस्मरणीय रहा।

कॉ. विद्या सशस्त्र बनकर पिछले 7 सालों से उत्तर तेलंगाना गुरिल्ला जोन में क्रांतिकारी संस्कृति के निर्माण में भाग लेती रही थी। उत्तर तेलंगाना आन्दोलन भीषण शत्रु-दमन के बीचों बीच ही आगे बढ़ रहा है। कठिन चुनौतियों के बीच, शत्रु-दमन की परवाह किए बिना कॉ. विद्या ने जेएनएम नेता के रूप में लोगों में सक्रिय काम किया। दुश्मन ने कॉ. विद्या और अन्य चार कॉमरेडों की हत्या करके उत्तर तेलंगाना के क्रांतिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन को जबर्दस्त नुकसान पहुंचाया। इस नुकसान से आन्दोलन जरूर उबरेगा। उनके आदर्शों को आत्मसात करते हुए अनगिनत लोग उनकी राह पर चल पड़ेंगे। जिस नई जनवादी संस्कृति के निर्माण की खातिर इन कॉमरेडों ने अपना खून बहाया, जनता उसे जरूर पूरा करेगी – कोई भी ताकत इसे रोक नहीं सकती। ❖

बस्तर के आदिवासियों पर आन्ध्र की फासीवादी तेलुगुदेशम सरकार की पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी की निंदा करो!

आदिवासी पुत्री कॉ. सोमे को लाल सलाम!

आन्ध्र के खून के प्यासे पुलिस वालों ने 31 दिसम्बर 2002 को खम्मम जिले के दुम्मुगूडेम मण्डल के ग्राम सीतानगरम में बस्तर के निहत्थे आदिवासियों पर एकतरफा गोलीबीरी करके कॉ. सोमे की जान ली और एक अन्य किसान (पुरुष) को घायल कर दिया। वर्ष 2002 में आन्ध्रप्रदेश में कुल 72 बेकसूरों और क्रांतिकारियों की हत्या कर चुकी पुलिस ने साल के आखिरी दिन बस्तरवासियों का खून बहाकर वर्षान्त का जश्न मनाया।

हाल में बस्तर की उत्पीड़ित जनता द्वारा आन्ध्र के जमींदारों पर अकाल हमले किए जाने के सिलसिले आन्ध्र पुलिस ने बस्तर के गांवों में व्यापक दमन अभियान छेड़ दिया। दक्षिण बस्तर में लोगों को पीजीए सप्ताह मनाने से रोकना भी इस दमनचक्र का लक्ष्य था। केन्द्र सरकार की अगुवाई में संयुक्त ऑपरेशनल कमान गठित करके सामावर्ती इलाकों में संयुक्त रूप से दमन की कार्यवाहियां चलाने का फैसला लेने के बाद बस्तर की जनता पर आन्ध्र पुलिस के जुल्म बहुत बढ़ गए - अब तो उसने बस्तर में घुसकर हत्याएं करना भी शुरू किया है। दक्षिण बस्तर डिवीजन के गोल्लापल्ली और किष्टारम इलाकों में चन्द्रुगूडेम, गोंदिगुडा, मोसलिमडुगु, वेदापाडु, पोलमपल्ली आदि गांवों से पुलिस ने कई लोगों को गिरफ्तार किया। इस क्षेत्र में लगने वाले हाट बाजारों में जनता और व्यापारियों को कई प्रकार की प्रताड़नाएं दीं। इससे यहां की जनता बेहद परेशान थी। पुलिस की ज्यादातियों के विरोध में 31 दिसम्बर को दिन के 3 बजे 4,000 जनता ने रैली निकाली। इस रैली के माध्यम से जनता ने पुलिस दमन बन्द करने और बेकसूर लोगों को रिहा करने की मांग की। लेकिन फासीवादी पुलिस को जनता की एकता रास नहीं आई। इसलिए उन्होंने जनता पर एकतरफा गोलीबारी शुरू कर दी। इस हमले में कड़ती सोमे (18) नामक एक निरीह आदिवासी युवती की मृत्यु हो गई। देवाल नामक किसान घायल हुआ। सोमे की लाश को पुलिस ने गायब कर दिया।

पुलिस ने अपनी दरिंदगी पर परदा डालने के लिए दुष्प्रचार शुरू कर किया कि 4,000 किसान सीतानगरम हाटबाजार को लूटने आए थे। लेकिन यह सरासर झूठ था। हम पुलिस के इस अमानवीय हत्याकाण्ड की कठोर शब्दों में निंदा करते हैं। कॉ. सोमे को हम श्रद्धांजलि पेश करते हैं और कॉ. सोमे के हत्यारों को बस्तर जनता नहीं बख्शेगी – यह हमारी चेतावनी है। ❖

एशियन सोशल फोरम

'एक और दुनिया' बहसों नहीं, बल्कि वर्ग संघर्ष से मुमकिन होगी !

विश्व सामाजिक मंच (वर्ल्ड सोशल फोरम - डब्ल्यूएसएफ) के अन्तर्गत 2 से 7 जनवरी तक हैदराबाद में एशियाई सामाजिक मंच (एशियन सोशल फोरम - एएसएफ) सम्पन्न हुआ। समूचे एशिया महाद्वीप से और दुनिया के विभिन्न देशों से कई संगठनों और प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया जोकि अभूतपूर्व था। इस मंच में भूमण्डलीकरण पर 'बहसें' की गईं। करीबन 840 संगठनों ने इस मंच में भाग लिया। इस दौरान कुल 10 कॉन्फ्रेन्सें, 10 पैनल बहसें, 160 सेमिनारें और 164 कार्यशालाएं आयोजित की गईं। करीब 8 करोड़ रुपए के अनुमानित खर्च से आयोजित इस फोरम में ऐसे कोई भी व्यक्ति भाग ले सकता था जोकि भूमण्डलीकरण और धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा का विरोध करता हो।

विश्व सामाजिक मंच (डब्ल्यूएसएफ) की प्रक्रिया जनवरी 2001 में ब्राज़ील के पोर्टो अलेग्रे में शुरू हुई थी। फिर फरवरी 2002 में भी उसने वहीं एक बहुत बड़ा सम्मेलन आयोजित किया। बाद में पोर्टो अलेग्रे के आयोजकों ने तय किया कि हर साल डब्ल्यूएसएफ का आयोजन किया जाए तथा हरेक महाद्वीप में और हरेक देश में भी सामाजिक मंच के विभागों का गठन किया जाए। उन्होंने इसके लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी बनाई। डब्ल्यूएसएफ को उसके आयोजकों ने यह कहकर परिभाषित किया कि "एक और दुनिया मुमकिन है" के नारे के तहत भूमण्डलीकरण का विरोध करने वाली ताकतें और व्यक्ति एकत्र होकर अपने संघर्षों और भूमण्डलीकरण की नीतियों के बारे में बहसें कर सकें, यह इसके लिए आयोजित एक खुला मंच है। यह भी कहा गया कि यह न तो एक संगठन है और न ही साझा मोर्चा। और भाग लेने वालों की ओर से कोई साझा राजनीतिक घोषणा भी नहीं की जाएगी। इसके अनुसार 6 से 10 नवम्बर तक इटली के फ्लारेन्स शहर में यूरोप सामाजिक मंच (ईएसएफ) का आयोजन हुआ जिसने 'एक और यूरोप मुमकिन है' का नारा दिया। इसी की कड़ी है हैदराबाद में आयोजित एएसएफ।

तगड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और साम्राज्यवादी संस्थाओं से प्राप्त पैसों से चलने वाले गैर-सरकारी संगठनों तथा सामंतवाद-विरोधी व साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों को त्याग चुकी सोशल डेमोक्रटिक पार्टियों के सम्बद्ध संगठनों ने पोर्टो अलेग्रे में डब्ल्यूएसएफ की प्रक्रिया शुरू करके उसके आयोजन की जिम्मेदारी ली। इसकी अगुवाई ब्राज़ील वर्कर्स पार्टी नामक एक सोशल डेमोक्रटिक पार्टी ने की। हमारे देश में आयोजित एएसएफ की पीछे भी मुख्य भूमिका भूमण्डलीकरण का विरोध करने का दिखावा भर करने वाली भाकपा, माकपा आदि संशोधनवादी पार्टियों तथा विदेशी धन से चलने वाले गैर-सरकारी संगठनों की रही। आयोजकों ने यह यकीन दिलाने की कोशिश बार-बार की कि नव-उदारतावादी आर्थिक नीतियों के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभर रहे आन्दोलनों की प्रेरणा से डब्ल्यूएसएफ पैदा हुआ है और वह भूमण्डलीकरण के विकल्प के रूप में उभर रहा है। भूमण्डलीकरण तथा धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा के खिलाफ एएसएफ का आयोजन होने की घोषणा करते हुए आयोजकों ने यह नारा दिया – "हिंसा रहित एक और एशिया मुमकिन है।"

हैदराबाद में क्यों?

आन्ध्रप्रदेश की जनता पिछले कई दशकों से सामंतवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ बगावत का परचम बुलन्द कर रखा है। यही वह जगह है जहां जमीन के लिए, रोटी के लिए और मुक्ति के लिए महान तेलंगाना हथियारबंद लड़ाई चली थी। उसके बाद कुछ सालों के अन्तराल के बाद जनता ने दोबारा हथियारबंद संघर्ष का रास्ता अख्तियार किया। बीच में आए अन्तराल में भी जनता कोई न कोई आन्दोलन करती ही रही। नक्सलबाड़ी के उजाले में चली श्रीकाकुलम लड़ाई को हालांकि अस्थाई पराजय झेलनी पड़ी, पर जल्दी ही तेलंगाना और अन्य इलाकों में आन्दोलन दोबारा खड़ा हो गया। जगित्याला विजयीयात्रा के साथ ही आन्ध्रप्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन ने एक छलांग लगाकर समूचे देश का ध्यान आकृष्ट किया। पिछले 30 सालों से कई नुकसानों को झेलकर भी आन्ध्र की उत्पीड़ित जनता एक स्पष्ट लक्ष्य के साथ लड़ रही है। पीपुल्सवार पार्टी के नेतृत्व में आन्दोलन कई जिलों में फैल गया। यह एक ऐतिहासिक सचाई है।

खासकर, पिछले 12 सालों से अमल हो रही साम्राज्यवाद-अनुकूल आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप सभी तबकों के लोगों को जीने का जरिया गंवाना पड़ रहा है। इससे वे अनिवार्य रूप से जहां-तहां संघर्ष का रास्ता अपना रहे हैं। चन्द्रबाबू सरकार द्वारा अमल विश्व बैंक-निर्देशित नीतियों के खिलाफ जनता अपनी आवाज बुलन्द कर रही है। कुल मिलाकर कहा जाए तो आन्ध्रप्रदेश की गिनती उन राज्यों में होगी जहां जनता में साम्राज्यवाद-विरोधी चेतना अपेक्षापूर्ण ज्यादा हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि यहां पर मजबूत क्रांतिकारी आन्दोलन की मौजूदगी ही इसका कारण है। इसीलिए साम्राज्यवादियों के पैसे से और इशारों पर यह मंच हैदराबाद में आयोजित किया गया। ऐसा इत्तेफाक से नहीं हुआ, बल्कि यहां की जनता की चेतना को कुन्द करने के लिए तथा उसे इस भ्रम में रखने के लिए कि किसी किस्म के आन्दोलन या निर्माण के बिना ही साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण को हराया जा सकता है, उन्होंने इस फोरम के आयोजन के लिए हैदराबाद का चुनाव किया। जब यहां पर कोई क्रांतिकारी जन संगठन या पार्टी या यहां तक कि नागरिक अधिकार संगठन, जो अपना खून बहाते हुए जनता का नेतृत्व कर रहा हो और साम्राज्यवाद व सामन्तवाद के खिलाफ वास्तव में संघर्ष कर रहा हो, किसी सभा या बैठक का आयोजन करना चाहता है तो चन्द्रबाबू की फासीवादी सरकार अपने फौलादी पैर से कुचल देती है। लेकिन उसी चन्द्रबाबू सरकार ने एएसएफ के सुचारू संचालन के लिए पूरा सहयोग दिया है।

इन मंचों के पीछे कौन हैं?

इन मंचों के उद्देश्यों और लक्ष्यों को समझने के लिए इनके पीछे रही ताकतों को पहचानना काफी है। मिसाल के तौर पर पोर्टो अलेग्रे में आयोजित डब्ल्यूएसएफ (फरवरी 2002) में फ्रान्स, बेल्जियम और पुर्तुगाल की सरकारों की ओर से मंत्रियों ने भाग लिया। इन देशों की सरकारों ने भूमण्डलीकरण का विरोध कभी नहीं किया, बल्कि वे अपने देशों में भूमण्डलीकरण की नीतियों को लागू कर रही हैं। हैदराबाद में आयोजित एएसएफ में मुख्य भूमिका संशोधनवादी पार्टियों के सबद्ध संगठनों और विदेशी धन के बल पर चलने वाले गैर-सरकारी संगठनों की रही। जहां संशोधनवादी पार्टियां पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में भूमण्डलीकरण की नीतियों को लागू कर रही हैं, वही गैर-सरकारी संगठन जन संघर्षों पर पानी फेरने की कोशिश में लगे हुए हैं। और देखिए, जास्टिस जीवन रेड्डी को इस सम्मेलन के लिए गठित स्वागत कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया जिसने जन संघर्षों को कुचलने के लिए 'पोटा' कानून की रूपरेखाएं तैयार की थीं। इस फोरम ने भूतपूर्व राष्ट्रपति के के.आर. नारायणन को आमंत्रित किया जिसने साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों पर स्वीकृति की मुहर लगाई थी और उसका विरोध कभी नहीं किया था। और वी.पी. सिंह जैसे लोगों को भी इसमें बुलाया गया जिनके इतिहास में भूमण्डलीकरण की खिलाफत कहीं भी नहीं है। इस फोरम के आयोजन के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से पैसा मिला है, जिनमें से प्रमुख है फोर्ड फौण्डेशन। इसका मतलब है, उत्पीड़ित जनता के असली दुश्मनों ने ही इसे उदारतापूर्वक पैसा दिया। तीसरे विश्व मंच के निर्देशक और राजनीतिक अर्थशास्त्री समीर आमिन ने खुद ही स्वीकार किया कि इस फोरम में कुछ ऐसे गैर-सरकारी संगठन भी शामिल हो रहे हैं जो साम्राज्यवादियों का हितपोषण करते हैं।

ये क्या कह रहे हैं?

ये क्या कह रहे हैं? और क्यों कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इस तरह पैसा बहा रही हैं? इन सवालों का जवाब तलाशने से पहले विश्व भर में और देश में मौजूद हालात पर गौर करना लाजिमी है। भूमण्डलीकरण के खिलाफ यूरोप, लातिनी अमेरीका, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका आदि देशों में जुझारू लामबन्दियां हो रही हैं, भले ही इसकी अनेक सीमाएं क्यों न रही हों। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ), विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), जी-8 देशों के सम्मेलनों के खिलाफ मजदूर और अन्य उत्पीड़ित वर्गों की जनता हजारों और लाखों की संख्या में आन्दोलित हो रही है। कल्याणकारी योजनाओं की समाप्ति और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में कटौती के खिलाफ सभी देशों में जन आन्दोलन बड़े पैमाने पर चल रहे हैं। मुख्य रूप से यूरोप और अमेरिका के देशों में कई सालों तक बहसों और बैठकों तक ही सीमित संगठन और ग्रुप पिछले 2-3 सालों से निर्माणात्मक संघर्षों में पहलकदमी और चेतना का प्रदर्शन कर रहे हैं। भूमण्डलीकरण की नीतियों की मार झेल रहे तबकों के लोग जुझारूपन के साथ कदम बढ़ा रहे हैं। अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमले के खिलाफ कई प्रदर्शन किए गए। इराक पर अमेरिका द्वारा प्रस्तावित युद्ध के खिलाफ जन प्रदर्शन अभी भी हो रहे हैं। दूसरी ओर पेरू, फिलिप्पींस, नेपाल, तुर्की और भारत में मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की रोशनी में सामंतवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ चल रहे जनयुद्ध मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं। इन देशों में क्रांतिकारी पार्टियां उत्पीड़ित वर्गों के लोगों को गोलबन्द करके साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के खिलाफ आन्दोलन चला रही हैं। हमारे देश में ही देखें तो, नीजीकरण और छंटनी के खिलाफ मजदूर और कर्मचारी संघर्ष कर रहे हैं। इन सभी संघर्षों को एक व्यापक लक्ष्य और एक स्पष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण से संगठित करने की जरूरत है।

पर इन मचों के पीछे की ताकतों का साफ इरादा यही है कि इसे न होने दिया जाए। ये भूमण्डलीकरण की नीतियों के लिए मानवाता के मुखौटे की जरूरत पर जोर देते हैं। इनका इरादा यह है कि विभिन्न आन्दोलनों और संगठनों को बिना किसी राजनीतिक व संगठनात्मक कार्य योजना के ही बहसों में उलझाए रखा जाए। मौजूदा आन्दोलनों को संगठित करने के बजाए उन्हें एक स्पष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण से दूर रखने का बीड़ा इन्होंने उठा लिया है।

वे ज्यादा से ज्यादा इतना करते हैं कि साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष के प्रति भाईचारा के चंद बयान जारी करें। लेकिन कोरे बयानों से कुछ नहीं होने वाला है। ये सामाजिक मंच कार्यान्वयन के विरोधी हैं। कम से कम एक साझा राजनीतिक घोषणा भी न कर सकने वाली इनकी निष्क्रियता को जनता के साथ छालावा ही कहना पड़ेगा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि इन्होंने हैदराबाद फोरम को एक व्यर्थ बहसबाजी और महंगे मेले के रूप में चलाया।

पर यह भी सच है कि हैदराबाद फोरम में कुछ सच्चे जनोन्मुखी संगठनों और शख्सों ने भी भाग लिया। इनमें से कुछ लोगों ने बताया कि वे उसमें शामिल होकर उसे बदलने की कोशिश करेंगे। इसे नादानी ही कहा जा सकता है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति सिर्फ बहसबाजी तक सीमित एक दिवालिया मंच में शामिल होता है, तो बहुत सम्भव है उसे बदलने की बात तो छोड़िए, खुद वह भी उसके अनुकूल बदल जाए। इसे उन बुद्धिजीवियों और संगठनों की राजनीतिक कमजोरी के रूप में ही समझा जा सकता है। इस सचाई को भी समझना होगा कि मौजूदा भयानक राजकीय हिंसा की वार से बचने के लिए भी कुछ बुद्धिजीवी जिनमें कुरबानी की भावना का अभाव है, इस किस्म के गैर-सरकारी संगठनों की गोद में चले जा रहे हैं।

दिवालियापन साफ तौर पर जाहिर!

एएसएफ ने अपने राजनीतिक दिवालियापन को खुद ही जाहिर किया। बोल्शेविक क्रांति के बाद के दौर में साम्राज्यवाद की सामन्तवाद के साथ हुई सांठगांठ की पृष्ठभूमि में – अगर साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को सामंतवाद-विरोधी संघर्ष के साथ जोड़ा नहीं जाता है तो उसका कोई मतलब नहीं है। ऐसे साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन का कोई मतलब ही नहीं रहता जब वह सामन्तवाद-विरोधी संघर्ष का

रूप धारण करके स्थानीय मसलों को नहीं उठाता। इन फोरमों को संघर्ष शब्द ही नहीं सुहाता। इस फोरम में भाग लेने वाले अधिकतर गैर-सरकारी संगठनों का मत है कि हमारे देश में सामन्तवाद है ही नहीं। इसलिए इन्होंने दिखावे के लिए ही सही, 'धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा' का जिक्र तो किया, लेकिन 'हिन्दू फासीवाद' कहने का साहस नहीं किया। इसी तरह, फोरम द्वारा जारी पत्रों में कहीं भी जमीन के सवाल का जिक्र ही नहीं था, जबकि भारत की जनता का वही मुख्य सवाल है। न तो जमीन के सवाल का, न ही जमीन के लिए जारी संघर्षों का और न सरकारों द्वारा अमल झूठे भूमि सुधारों का कोई जिक्र किया गया। यदि फोरम यह मानता है कि इसका भूमण्डलीकरण से कोई लेना-देना नहीं है, तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि इस देश में साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों को किस प्रकार लागू किया जा रहा है, इसके बारे में फोरम को कुछ भी मालूम नहीं है। लाखों एकड़ जमीन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सुपुर्द की जा रही है। कृषि क्षेत्र में ग्लोबल मार्केट फैल रहा है। किसानों द्वारा उगाई फसलों को समर्थन मूल्य देने से सरकारें मना कर रही हैं। भूमिहीन किसानों को मजदूरी काम मिलना दुष्कर होता जा रहा है। ये सभी साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। भूमण्डलीकरण की नीतियों के तहत ही सरकारें आदिवासियों की जमीनों को सुरक्षा देने वाले कानूनों को निरस्त कर रही है। उनकी जमीनों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हवाले कर रही हैं। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय व परामर्श संगठनों द्वारा प्रकाशित कई दस्तावेजों में भूमि सुधारों का साफ तौर पर विरोध किया गया। इन सभी की पृष्ठभूमि में देखें तो क्या इसका कोई मतलब है कि फोरम जमीन के सवाल पर कुछ भी न कहे? और तो और, हैदराबाद वह इलाका है जहां 1946-51 के बीच 4,000 किसानों ने जमीन के लिए अपनी जानें कुरबान की थीं। वह महान तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष ही था जिसने 'जमीन उसकी जो उसे जोते' के नारे को एजेण्डे पर लाया। इसके इर्द-गिर्द आज भी जमीन, रोटी और मुक्ति के लिए एक शानदार संघर्ष चल रहा है। इसी स्थान पर आयोजित फोरम में जमीन के सवाल का जिक्र तक नहीं किया गया!

अब भूमण्डलीकरण के साथ भाकपा और माकपा की सांठगांठ की थोड़ी चर्चा की जाए जिन्होंने हैदराबाद फोरम के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई। हमारे देश में भूमण्डलीकरण को फैलाने में इन दोनों पार्टियों का पूरा सहयोग रहा। माकपा ने संयुक्त मोर्चा सरकार को बाहर से समर्थन देकर और भाकपा ने खुद उसमें शामिल होकर साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों को आगे बढ़ाया था। भाकपा का प्रमुख नेता इन्द्रजीत गुप्त विनिवेश की कैबिनेट कमेटी के अध्यक्ष के रूप में काम कर चुका है। इस कमेटी ने निजीकरण की प्रक्रिया पर गहराई से अमल किया। पश्चिम बंगाल की 'वाम' सरकार ने न सिर्फ भूमण्डलीकरण की नीतियों पर अमल किया, बल्कि उसके अमल को आगे बढ़ाने के लिए किन्से एण्ड कम्पनी को आमंत्रित किया। माकपा के शीर्ष नेताओं ने शर्म-हया छोड़कर ऐलान किया कि विश्व बैंक के दलाल चन्द्रबाबू का सम्बन्ध भाजपा के साथ भले ही कायम रहे, उसके साथ हाथ मिलाने में उन्हें कोई परहेज नहीं है। मौजूदा मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य चन्द्रबाबू से गुर सीख रहा है ताकि क्रान्तिकारियों का सफाया किया जा सके जो साम्राज्यवाद के खिलाफ सच्चा संघर्ष कर रहे हैं। अपने इस काले इतिहास के बावजूद भाकपा और माकपा इन फोरमों का आयोजन करके किसे धोखा देने की कोशिश कर रही हैं?

'एक और दुनिया' कैसे मुमकिन होगी?

इस सामाजिक फोरम ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्पष्ट कर दिया कि वह व्यवहार, परिप्रेक्ष्य, सिद्धान्त, आन्दोलन आदि बातों के खिलाफ है। एक मजबूत निर्माण से और ताकतवर सिद्धान्त से सतत व्यवहार में रहने वाले भूमण्डलीकरण जैसे दुश्मन को बिना किसी निर्माण, सिद्धान्त और व्यवहार के कैसे हराया जा सकता है, यह बात इस फोरम के आयोजक ही जानें! उनकी सपनों की 'एक और दुनिया' बिना किसी व्यवहार के ही साकार होगी! इनकी रिपोर्टों और समारोहों को देखने से यही प्रतीत होता है कि इनकी कथनी बहुत और करनी थोड़ी! इस फोरम ने खुद को एक 'विकल्प' के रूप में प्रस्तुत किया। वास्तव में यह पूंजीवादी व्यवस्था का नहीं, बल्कि वर्तमान जन संघर्षों का 'विकल्प' साबित हो चुका है।

समाजवाद का नाम लिए बिना ही इनकी कही 'एक और दुनिया' भ्रामक और काल्पनिक भर है। 'एक और दुनिया' बातों से नहीं बनती। ये लोग भूमण्डलीकरण को हराने की बात जो कर रहे हैं, उसके लिए मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था को जड़ों से उखाड़ फेंकना होगा। इतिहास गवाह है, इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यह कठोर संघर्षों, अनमोल कुरबानियों और जनता की अदभुत रचनात्मकता से ही मुमकिन होगा, न कि बातों या नारों से। हजारों लोगों द्वारा हफ्ते भर बैठकर बिना किसी कार्यवाही का आह्वान दिए ही की जाने वाली बहसों से कई गुना महत्वपूर्ण होगी जनता की संगठित शक्ति द्वारा की जाने वाली एक छोटी सी कार्यवाही।

लोगों और बुद्धिजीवियों, होशियार!

साम्राज्यवाद के खिलाफ सभी उत्पीड़ित तबकों में बढ़ रहे असन्तोष तथा विकल्प को हासिल करने की उनकी आकांक्षा का फायदा उठाने के लिए कई किस्म के धोखेबाज और पाखण्डी सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। आकर्षक नारों और छलपूर्ण बातों से तरह-तरह की तिकड़मबाजी कर रहे हैं। इसलिए साम्राज्यवादियों द्वारा पोषित गैर-सरकारी संगठनों और उनके द्वारा विभिन्न सामाजिक मंचों के प्रति सावधानी बरतने की जरूरत अब पहले के मुकाबला ज्यादा बढ़ गई है। साम्राज्यवाद को, उसकी सेवा कर रहे दलाल पूंजीवाद को और उसके साथ सांठगांठ कर चुके सामंतवाद को जड़ों से उखाड़ फेंकने के लक्ष्य से सर्वहारा नेतृत्व में चलने वाली जनवादी क्रान्ति ही एक मात्र और सही विकल्प है। इस क्रान्ति से सम्बद्ध और इसके अन्तर्गत होने वाले हरेक वर्ग संघर्ष जायज है। और वर्ग संघर्ष के सिवाए 'एक और दुनिया' के लिए कोई दूसरा नजदीकी रास्ता ही नहीं है। ❖

वक्तव्य

बस्तर पैकेज का असली लक्ष्य बस्तरवासियों का दमन ही है!

शोषक वर्गों की लाख कोशिशों के बावजूद बस्तर संभाग में जनता के संघर्ष आगे ही बढ़ रहे हैं। सरकार ने इन्हें कुचलने के लिए कई बार दमन अभियान चलाया, पर हर बार बस्तर की जनता ने उसका मुंहतोड़ जवाब दिया। बस्तर की जनता की एकजुटता को तोड़ने और उसमें फूट डालने की नीयत से सरकार कई घिनौनी कोशिशें कर रही हैं। विकास के नाम पर करोड़ों रूपए बहाकर चन्द लोगों को फायदा पहुंचा रही है ताकि उन्हें अपना दलाल बनाया जा सके। इन झूठे विकास कार्यों से बस्तर का विकास तो कुछ नहीं हुआ, मंत्री और ठेकेदार मालामाल जरूर हो गए। और इनकी जूठन खाने वाले कुछ लोग गांवों में सरकार के दलालों के रूप में उभरे। इन दलालों को सामने रखकर सरकार बस्तर जनता को दबाने की नाकाम कोशिशें कर रही है।

हरेक सरकार ने पुलिस दमन के बल पर ही बस्तर जनता का दमन करने की कोशिश की, पर इसमें उन्हें कामयाबी नहीं मिली। अब सरकार को जनता में फूट डालने और चंद लोगों को अपना दलाल बनाने की जरूरत महसूस हुई। 'एक हाथ में लड्डू और दूसरे डंडा' वाली नीति अपनाते हुए सरकार ढोंगी विकास कार्यों को बड़े पैमाने पर अंजाम दे रही है। इन विकास कार्यों का फायदा उठाने वाले कुछ लोग सरकार के दलाल बनकर जनता के दमन में सरकार का साथ दे रहे हैं। राजीव गांधी से लेकर वर्तमान मुख्यमंत्री अजीत जोगी तक कई नेताओं ने बस्तर विकास के नाम पर करोड़ों रूपए के पैकेज की घोषणाएं कीं। लेकिन बस्तरिया जनता आज भी शोषण और लूटपाट का शिकार हो रही है। गरीबी और बीमारी से अब भी जूझ रही है।

इस शोषण और दमन की नौटंकी को आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने 8 जनवरी को अपने मंत्रीमण्डल की बैठक जगदलपुर में बुलाई। इस बैठक में ग्यारह सूत्रीय बस्तर पैकेज की घोषणा बड़े नाटकीय ढंग की। इस पैकेज पर नजर डाली जाए तो साफ तौर पर पता चल जाता है कि यह शोषण और दमन वाली नीति की ही कड़ी है।

इस ग्यारह सूत्रीय पैकेज में सड़क और पुलिया निर्माण के लिए 242 करोड़ रूपए की भारी-भरकम राशि आबंटित की गई। 1910 के भूमकाल महासंग्राम के समय, यानि अंग्रेजी जमाने से लेकर आज तक सरकारों ने बस्तर की सम्पदाओं को लूटने और इसके विरोध में विद्रोह करने वाली जनता को कुचलने के लिए ही सड़कों का निर्माण किया। अब अजीत जोगी ने भी इसी नीयत से पैकेज की पूरी राशि का दो-तिहाई भाग सड़क निर्माण के लिए आबंटित किया। अगर सड़क निर्माण से ही विकास की गंगा बहती है तो क्यों राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित जगदलपुर में कई उद्योग बन्द पड़े हैं? और 15-15 प्रशिक्षण केन्द्र नहीं चल रहे हैं? इस बहुचर्चित बस्तर पैकेज में शिक्षा और चिकित्सा को कोई महत्व नहीं दिया गया। इन क्षेत्रों की अनदेखी की गई। बस्तर में स्वास्थ्य क्षेत्र का हाल यह है कि कई स्वास्थ्य केन्द्र बिना डॉक्टर के ही चल रहे हैं। इस स्थिति को बदलने की जरूरत पर इस पैकेज में कोई जोर नहीं है। शिक्षा क्षेत्र की बदहाली तो जगजाहिर है। ज्यादातर शिक्षकों को वेतन नहीं मिल रहा है। जब शिक्षकों की नौकरी की ही कोई गारन्टी नहीं हो तो सरकार शिक्षा क्षेत्र के विकास की गारन्टी कैसे दे सकती है? सरकार अभी तक इन दोनों क्षेत्रों के लिए बहुत कम पैसा आबंटित करती आ रही है। इससे साफ पता चल जाता है कि बस्तर पैकेज का असली लक्ष्य बस्तर का विकास नहीं बल्कि बस्तर की जनता का दमन है।

सिंचाई के मामले में सरकार की नीति से 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा' का मुहावरा याद आता है। इस पैकेज में सिंचाई योजना का न तो कोई जिक्र किया गया न ही इस मद पर कोई आबंटन किया गया। वास्तव में बस्तर का विकास तभी सार्थक होगा जब बस्तरवासी अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसके लिए खेती-किसानी को विकसित करना बेहद जरूरी है। इसके लिए सिंचाई सुविधाएं बढ़ाना जरूरी है। बस्तर विकास के लिए यही सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन बस्तर पैकेज में इसके सम्बन्ध में बस, हवाई बातें कही गईं।

8 जनवरी को बस्तर पैकेज की घोषणा के ठीक सात दिन बाद केन्द्र सरकार के मार्गदर्शन में पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक रायपुर में आयोजित की गई। यानि एक तरफ बस्तर विकास की बातें करते हुए ही दूसरी तरफ बस्तर में जारी जन संघर्षों को कुचलने की साजिशें रची जा रहीं हैं। इस बैठक में बस्तर जनता के दमन की योजनाओं के बारे में चर्चा की गई।

बस्तर पैकेज की घोषणा के पीछे अजीत जोगी का एक और मकसद भी है। इस साल के अन्त में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव को मद्देनजर रखकर भी यह पैकेज बनाया गया। इससे बस्तरवासियों को रिझाकर वोट बटोरने की चाल है यह।

हम बस्तर की जनता से, बुद्धिजीवियों से और जनवाद के प्रेमियों से अपील करते हैं कि बस्तर पैकेज के असली उद्देश्यों को समझ लें। बस्तर पैकेज की आड़ में बस्तर जनता के संघर्षों को कुचलने के लिए सरकार द्वारा की जा रही साजिशों को समझ कर उन्हें हरा दें। बस्तर के चहुंमुखी विकास के लिए जारी जनसंघर्ष को आगे बढ़ाएं और अपना समर्थन दें।

(कोसा)
सचिव
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
15-01-2003 **भाकपा (मा-ले) [पीपुल्स वार]**

वक्तव्य

मुरदोण्डा बस घटना में
एक आम महिला और तीन बच्चों की मृत्यु के प्रति अफसोस

2 फरवरी को बासागूडेम के निकट मुरदोण्डा में पीजीए द्वारा बस पर किए गए हमले में चार पुलिस वालों के अलावा एक आम महिला और उसके तीन बच्चों की मृत्यु हो गई। पुलिस द्वारा की गई जवाबी गोलीबारी में पीजीए सदस्य कॉमरेड भास्कर शहीद हो गए। आम लोगों की मृत्यु के प्रति हम गहरा दुख प्रकट करते हैं और उनके परिवार वालों और रिश्तेदारों को हम संवेदना देते हैं। इस घटना से हम सबक ले रहे हैं और आइंदा ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं न हों, इसके लिए पूरी एहतियात बरती जाएगी।

घटनाक्रम

पिछले कुछ सालों से आन्दोलन के इलाकों में पुलिस वाले अपने वाहनों के बजाए यात्री बसों में और निजी वाहनों में आम लोगों के बीच सफर कर रहे हैं। हमारे हमलों से बचना और हम पर हमला करना इनकी रणनीति है। वे इस प्रकार सार्वजनिक वाहनों का इस्तेमाल करते हुए क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस की इस रणनीति को तोड़ने के इरादे से पीजीए ने हमले की योजना बनाई। योजना के अनुसार पुलिस और आम लोग मिलकर सफर करते समय बस को रोककर आम लोगों को बस से उतारना था। बाद में पुलिस को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर करना था। अगर पुलिस वाले आम लोगों को ढाल की तरह इस्तेमाल करके उन्हें बस से उतरने से रोक देते हैं तो हमला रोककर वापिस आना था। जैसे भी हो, पुलिस वालों को यह एहसास कराना हमारी योजना था कि वे सार्वजनिक वाहनों में भी सुरक्षित नहीं रहेंगे।

इस योजना के साथ हमले की तैयारियां पूरी कर ली गईं। 2 फरवरी की सुबह बस जब बासागूडेम से रवाना हुई, हमें सूचना मिली थी कि बस में छह पुलिस वाले आ रहे हैं। तयशुदा जगह पर पीजीए सैनिकों ने बस को रोका और आम लोगों से बस से उतर जाने की अपील की। तुरन्त ही पुलिस वालों ने बस के अन्दर से ही तीन गोलियां दागीं। सभी लोग हमारे अनुरोध से बस से उतर गए। ड्राइवर और कण्डक्टर भी उतर गए। पीजीए ने पुलिस वालों को भी हिदायत दी कि वे हथियार डालकर आत्मसमर्पण करेंगे तो उन्हें जान का खतरा नहीं होगा। पुलिस वाले एक तरफ आत्मसमर्पण की बात करते हुए ही समय बर्बाद कर रहे थे। इस बीच पीजीए सैनिकों को समझ में आया था कि बस के अन्दर एक महिला और 2-3 बच्चे फंसे हुए हैं, जिन्हें पुलिस ने रोक लिया। पुलिस पर आत्मसमर्पण के लिए जोर डालने के इरादे से पीजीए ने बस के बाहर कुछ दूर एक बम विस्फोट कर दिया। लेकिन कोई नहीं उतरा पीजीए को साफ तौर पर मालूम हो गया कि पुलिस वालों ने अपने बचाव के लिए ही एक महिला और कुछ बच्चों को रोक लिया। फिर एक बार पुलिस वालों पर दबाव डालने के इरादे से एक पेट्रोल बम बस से कुछ दूर पर फोड़ने का फैसला लिया गया। लेकिन गलती से वह बम बस के दरवाजे के निकट ही फट गया और जल्दी ही पूरी बस को आग लग गई। बस में फंसी महिला और बच्चों को बचाने का मौका ही नहीं रहा था। पुलिस वाले बस से कूदकर भागने की कोशिश करने लगे तो पीजीए ने उन्हें गोलियों से भून डाला। इसमें कम्पनी कमाण्डर समेत चार पुलिस वाले मारे गए। बाद में मिली जानकारी के मुताबिक इस घटना में मारी गई महिला का नाम कोंडागोरला कमला है। मारे गए तीनों बच्चे उस महिला के ही थे। हमने जानबूझकर बस पर पेट्रोल बम नहीं फेंका था, बल्कि गलती से और हमारे अंदाजे से उलट वह बस के दरवाजे पर फटा था। लेकिन पुलिस वालों ने जानबूझकर उन्हें ढाल की तरह इस्तेमाल करने के लिए ही अन्दर रोक लिया था। कमला और उनके तीन बच्चों की मृत्यु के प्रति हम बेहद चिन्तित हैं। हम फिर एक बार उनके सगे-सम्बन्धियों को हमारी गहरी संवेदना प्रकट करते हैं। इस मौके पर हम सभी लोगों से वादा करते हैं आइंदा ऐसी गलतियां न हों, आम जनता की हिफाजत हो, इसकी एहतियात हम अपनी अगली कार्यवाहियों में जरूर बरतेंगे।

इस हमले में शहीद हुए कॉमरेड भास्कर को हम श्रद्धांजलि पेश करते हैं। उन्होंने पुलिस बलों के खिलाफ जिस तरह अदम्य शूरता और निडरता का प्रदर्शन किया, वह पीजीए सैनिकों के लिए प्रेरणादायक है।

पीजीए की दक्षिण सब-जोनल कमान की ओर से जारी

(हम मुरदोण्डा घात हमले में शहीद हुए कॉमरेड भास्कर की जीवनी इस अंक में प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि हमें सम्बन्धित जिम्मेवारों से अभी नहीं पहुंची है। आशा है हम अगले अंक में जरूर प्रकाशित करेंगे।
- सम्पादकमण्डल)

(.... पृष्ठ 21 का शेष)

इस स्थिति से तंग आ चुकी जनता ने आवाज उठाना शुरू किया। मरपल्ली, करेंचा, गोल्लागूडेम, कोत्तागूडेम, सिल्लमपल्ली, मोतकपल्लि, दुब्बागूडेम, रेगुलवाई, मुडवाई और बस्वापुर गांवों के 900 लोगों ने मरपल्ली पुलिस थाने में धरना देकर पुलिसिया अत्याचारों को बन्द करने की मांग की। जनता की संगठित ताकत के सामने पुलिस की बोलती बन्द हो गई। जनता की मांगें मान लेने की हामी भरी। इस संघर्ष से जनता का उत्साह बढ़ा और वह एकजुटता से पुलिस दमन का मुकाबला करने के लिए कदम बढ़ा रही है।

पुलिस मुखबिर कोडिया को सजा-ए-मौत

एटापल्ली एलजीएस ने 18 नवम्बर 2002 को गड़चिरोली जिले के कसन्सूर रेंज के गड़दापल्ली गांव में कोड़िया नामक पुलिस मुखबिर का सफाया कर दिया। कोडिया खूब शराब पीता था और उसकी इस कमजोरी को पहचानकर पुलिस वालों ने उसे अपना मुखबिर बना लिया। उसने एक बार दस्ते के गांव में आने की खबर पुलिस को पहुंचाई थी। हालांकि पुलिस ने दस्ते को घेरने की कोशिश की, लेकिन दस्ता वहां से पहले ही जा चुका था तो कोई नुकसान नहीं हुआ। इसके बाद कोडिया ने गांव छोड़कर पुलिस थाने में डेरा जमाया। 1992 से इसने अपना गांव छोड़कर पुलिस की मदद से दूसरे गांवों में रहना शुरू किया। और वहां भी उसने जनता को परेशान करना शुरू किया। इसने वहां शराब का धंधा खोला था। और गांव के लोग अपने निजी उपयोग के लिए शराब बनाते हैं तो डराना-धमकाना शुरू किया। यह सब देखकर एटापल्ली एलजीएस ने इसका सफाया करके जनता को राहत पहुंचाई।

क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा चलाए जा रहे दमनचक्र के खिलाफ

10 जनवरी को दन्तेवाड़ा जिला बन्द सफल

दण्डकारण्य में दिनोंदिन बढ़ रहे क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए छत्तीसगढ़ अजीत जोगी सरकार दमनचक्र को तेज कर रही है। खासकर पीजीए सप्ताह के कुछ दिन पहले से दमन में बेहद इजाफा किया गया। इस दमन के खिलाफ पार्टी की दक्षिण एवं पश्चिम बस्तर डिवीजनल कमेटियों ने संयुक्त रूप से 10 जनवरी को बन्द का आह्वान किया। इन दोनों डिवीजनों की जनता ने बन्द को पूरी तरह सफल बनाया। इसे विफल करने की पुलिस की कोशिशों पर पानी फेर दिया।

बढ़ता दमनचक्र

पीजीए सप्ताह को विफल करने के लिए 10 दिन पहले से ही मद्देड़ और भैरमगढ़ इलाकों में पुलिस ने गांवों पर छापेमारियां, गिरफ्तारियां, घरों की तलाशी, खोजबीन अभियान, जनता को प्रताड़ित करना और मारपीट आदि शुरू किया। बीजापुर पुलिस जिले में विशेष पुलिस के 10 दलों को गठित कर एक-एक दल में 25-30 जवानों के साथ यह दमन अभियान चलाया गया। ग्राम रेड्डी (गंगलूर रेंज) में पुलिस ने संघ नेताओं को गिरफ्तार किया तो महिलाओं ने बगावत कर छुड़ा लिया। पुलिस ने रेड्डी, परालनार, कमका और गोंगला गांवों में भी आतंक मचाया। कई किसानों को मारा-पीटा, यहां तक कि बच्चों व महिलाओं को भी नहीं बख्शा।

मद्देड़ एरिया में आवापल्ली पुलिस ने मरदोण्डा, धरावरम, पोन्नूर, दुग्गाय्यागूडेम, चेरुकुदोड्डी और पावरेट गांवों में भी आतंक का ताण्डव मचा दिया।

पीजीए सप्ताह के दौरान जनता और जन मिलिशिया ने कई हथियारबन्द कार्रवाइयां कीं। फरसेगढ़ में कुरसम मुकेश नामक होमगार्ड का सफाया किया। इसके बाद फरसेगढ़ पुलिस ने ग्राम चिन्तल पर हमला करके महिलाओं और वृद्धों को मारा-पीटा। 45 किसानों को गिरफ्तार किया। तीन किसानों पर मुकेश की हत्या का मामला दर्ज करके जेल भेज दिया। 11 दिसम्बर को पीजीए द्वारा एस.पी. के काफिले पर की गई कार्यवाही के बाद नूकनपल्ली, धरावरम और मुरकानार गांवों पर हमला करके बच्चों और बूढ़ों को भी न छोड़ते हुए सभी लोगों को बन्दूक के कुन्दों से मारा। घरों में घुसकर सामान की तोड़-फोड़ की। घरों से मुर्गे लूटकर ले गए। धान, चावल आदि मिट्टी में मिला दिया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का घर जलाया। हमले की जगह से 200 गज की दूरी पर ग्रेनेड और मोर्टारों से फायर करके युद्ध का माहौल बनाया। एसपी के काफिले पर हमले से बौखलाए पुलिस वालों ने जनता को भयभीत किया। धरावरम में 5, नूकनपल्ली में 7 मुरदोण्डा में 10, दुग्गय्यागूडेम में 16 पोन्नूर में 11 और एलमिडि में 3 लोगों को गिरफ्तार किया। इन्हें खूब यातनाएं देकर जेल भेज दिया। इन गांवों के अलावा कई दर्जनों गांवों से बेकसूर लोगों को गिरफ्तार किया।

इस दमन अभियान के विरोध में तथा गिरफ्तार लोगों को बिना शर्त रिहा करने की मांग करते हुए पार्टी के आह्वान पर दक्षिण और पश्चिम बस्तर डिवीजनों की जनता ने 10 जनवरी को बन्द का पालन किया।

जनता की व्यापक भागीदारी से बन्द सफल

पश्चिम बस्तर डिवीजन में डीएकेएमएस और केएएमएस के दर्जनों प्रचार दलों ने व्यापक प्रचार अभियान चलाया। पोस्टर, बैनर, पर्चे आदि प्रचार सामग्री के जरिए बन्द के बारे में जनता में विस्तृत प्रचार किया गया। बन्द के दिन 430 लोगों ने मिलिशिया के नेतृत्व में गंगलूर-बीजापुर रोड पर तीन जगहों में गड्ढे खोदे। ग्राम रेड्डी के पंचायत भवन को 130 जनता ने तबाह कर दिया। पूंबाड पंचायत भवन को 200 जनता ने ध्वस्त कर दिया। नैमेड सड़क को भी जनता ने खोद डाला। भैरमगढ़ रेंज में 140 लोगों ने पायकापारा में पंचायत भवन को गिरा दिया। मारवाड़ा पंचायत भवन को 160 लोगों ने ढहा दिया। 100 लोगों ने नेल्लिसनार में पंचायत भवन और नाका भवन को आंशिक रूप से ध्वस्त कर दिया। हारियल और फूलगट्टा गांवों में भी बन्द के समर्थन में पंचायत भवनों को गिरा दिया गया। इस सभी कार्यवाहियों में जन मिलिशिया सदस्यों ने जनता की अगुवाई की।

बन्द के दिन सरकारी और निजी वाहनों का आवागमन ठप्प हो गया। गंगलूर, मिरतुल, कुटरु, तोयानार, नैमेड, मोदुगुपल्ली, मद्देड़, आवापल्ली आदि हाट बाजार बन्द रहे। बीजापुर, आवापल्ली और पटनम में सरकारी कामकाज बन्द रहे। स्कूलें और दुकानें बन्द रखकर छात्रों, अध्यापकों और व्यापारियों ने बन्द का समर्थन किया। बन्द को विफल करने के लिए सैकड़ों एसएएफ और जिला पुलिस बलों को सड़कों पर तैनात किया गया। वाहनों की तलाशी ली गई और गश्त बढ़ा दी गई। बीजापुर एसपी ने दुकानदारों को दुकानें बन्द न करने और वाहनों के मालिकों को वाहन चलाने के आदेश देकर बन्द को विफल करने की नाकाम कोशिश की। लेकिन जनता ने बन्द में बढ़-चढ़कर भाग लेकर सरकारी दमन के प्रति और पुलिसिया अत्याचारों के प्रति अपना आक्रोश जताया। ❖

क्रान्तिकारी आन्दोलन पर बढ़ते राजकीय दमन के विरोध में 20 मार्च को 'दण्डकारण्य बन्द' को सफल बनाओ !

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए द्वार खोल रही जोगी सरकार

कृषि क्षेत्र में सिंजेन्टा की घुसपैठ और शिवनाथ नदी की बिक्री का विरोध करें !

वर्ष 2001 में जब केन्द्र की राजग सरकार ने बाल्को को सस्ते में स्टेरलाइट कम्पनी को बेचा था तब सभी के साथ-साथ छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने भी विरोध का नारा बुलन्द किया था। जनता के आक्रोश को देखते हुए उसेने जनता का पक्ष लेने का ड्रामा किया था। बाल्को को कौड़ियों में बेचने के लिए केन्द्र सरकार को जमकर कोसा था। पर अब लगता है कि उसनो अपने चेहरे पर से मुखौटा साफ तौर पर हटा लिया है। छत्तीसगढ़ को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की चरागाह में बदलने की प्रक्रिया तेजी से चला रहा है। पिछले साल बस्तर जनता के तीखे विरोध के बावजूद बस्तर में नगरनार स्टील प्लान्ट की नींव डाली थी। एक रूसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी को फायदा पहुंचाने के लिए उसने जनता को मार-पीट कर और जेल में ठूंस कर भी यह काम किया।

चार महीने पहले शिवनाथ नदी को बेचकर छत्तीसगढ़ सरकार ने सम्भवतः एक कीर्तिमान बनाया है। क्योंकि अब तक भारत के किसी भी मुख्यमंत्री ने नदी को नहीं बेचा था। दुर्ग जिले में 23.5 किलोमीटर नदी को 'रेडियस वाटर लिमिटेड' नामक एक निजी कम्पनी को 25 साल के लीज पर दिया गया है। इस कम्पनी को बेहिसाब मुनाफा पहुंचाने वाली शर्तों पर यह लीज दी गई। हाल ही में मोहलाई गांव के लोगों ने नदी के पानी पर अपने अधिकार वापिस पाने के लिए जब आन्दोलन किया तभी छत्तीसगढ़ की जनता को यह मालूम हुआ कि सरकार नदी-नालों को भी बेच रही है। नदी में नहाने-धोने, पानी लेने, मछली पकड़ने से मना करते हुए निजी कम्पनी के लठैतों ने ग्रामीण जनता को भगा दिया। बाद में सिंजेन्टा प्रकरण और उस पर अजीत जोगी की प्रक्रिया को सुनकर तो छत्तीसगढ़ जनता स्तब्ध रह गई।

छत्तीसगढ़ के धान की दुर्लभ प्रजातियों की अनमोल धरोहर को सिंजेन्टा नामक एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी को बेचने की साजिश फिलहाल तो नाकाम हो गई। इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय और सिंजेन्टा के बीच होने वाला करार फिलहाल खटाई में पड़ गया। लेकिन मुख्यमंत्री के बयानों से लगता है कि यह खतरा अभी पूरी तरह टला नहीं। नदी को और पानी को बेचने वाला क्या धान की नस्लों को नहीं बेच सकता?

छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के कोने-कोने से चुन-चुनकर इकट्ठी की गई धान की करीबन 20,000 नस्लें रायपुर स्थित इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में मौजूद हैं। इन्हें संग्रहित करने का श्रेय देशभक्त वैज्ञानिक डॉ. रिछारिया को जाता है। इन नस्लों को छत्तीसगढ़ के किसानों ने अपनी मेहनत और लगन से विकसित किया है। इन किस्मों में हर मौसम, परिस्थिति, कम समय में, देर से, कम पैरा, ज्यादा पैरा, बाढ़, सूखा, दलदल, गहरे पानी, कीटरोधी – हर प्रकार के बीज शामिल हैं।

इस अनमोल खजाने पर सिंजेन्टा की नजर पड़ चुकी है। सिंजेन्टा वह बहुराष्ट्रीय कम्पनी है जो 4 बदमाशशुदा कम्पनियों – सैन्डोज, सिबा-गेइगी, आस्ट्रा और जेनेरका – को मिलाकर बनी है। इस सिंजेन्टा कम्पनी को धान की कुछ विशेष प्रजातियों को बड़े गोपनीय ढंग से अनुसंधान के नाम पर भेंट करने की तैयारियां पूरी कर ली गई थीं। इनका इस्तेमाल करके सिंजेन्टा धान की नई हाइब्रिड प्रजातियां विकसित करेगी और विश्व बाजार में बेचेगी। बिक्री से होने वाली आय का कुछ हिस्सा कृषि विश्वविद्यालय को मिलेगा। कुछ फन्ड भी दिया जाना था। नई हाइब्रिड बीज पर पेटेन्ट अधिकार सिंजेन्टा को होगा। आपसी समझौता पत्र भी तैयार हुआ। हस्ताक्षर करना बाकी था। लेकिन डॉ. रिछारिया द्वारा स्थापित देशभक्ति की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस साजिश का पर्दाफाश किया और अपना विरोध दर्ज किया।

इसके बाद अनेक जागरूक बुद्धिजीवियों और जनता का पक्ष लेने वाले अन्य जन संगठनों ने जोरदार विरोध किया। यह सब देखकर सिंजेन्टा और कृषि विश्वविद्यालय ने अपना कदम पीछे ले लिया। सरकार ने इस मामले पर 'जानकारी न होने' की बात की। मजे की बात यह है राजग सरकार का सूत्रधार और बाल्को को कौड़ियों में बेचने वाली भाजपा ने भी इसके खिलाफ आवाज उठाई। राजनीतिक अवसरवादिता को समझने के लिए इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है? हां, यही सही समय था क्योंकि साल के आखिर तक चुनाव जो होना है!

एक तरफ इस प्रकरण से हुई शर्मिन्दगी से अपनी नाक बचाने की कोशिश करते हुए ही जोगी ने छत्तीसगढ़ के बुद्धिजीवियों को अपने 'संकुचित' दायरे से बाहर आने और दुनिया को देखने की हिदायत दी। मुख्यमंत्री का आशय यह है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बगैर किसी की भलाई नहीं हो सकती। जनता के विरोध के चलते फिलहाल यह साजिश भले ही पिट गई हो, लेकिन कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हमले का खतरा पूरी तरह से नहीं टला। सत्ता में चाहे कांग्रेस हो या भाजपा, सभी पार्टियां साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों को पूरे लगन के साथ लागू कर रही हैं। विश्व व्यापार संगठन के शर्तों के मुताबिक केन्द्र और राज्य सरकारें देश के कृषि क्षेत्र को साम्राज्यवादी लूट का मैदान बना रही हैं। छत्तीसगढ़ सरकार यहां की अनमोल प्राकृतिक सम्पदाओं को औने-पौने दामों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बेचने की साजिशें रच रही है। शिवनाथ नदी की बिक्री और सिंजेन्टा प्रकरण सिर्फ दो उदाहरण भर हैं। इसलिए हमारी प्राकृतिक सम्पदाओं को और अनमोल धरोहर को साम्राज्यवादियों के हाथों में पड़ने से बचाने के लिए एक व्यापक जन आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है। तमाम देशभक्तों, किसानों-मजदूरों और बुद्धिजीवियों को आगे आना होगा और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रवेश के लिए द्वार खोल रही सरकार की दिवालिया नीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करनी होगी। ❖

वक्तव्य

बस्तर में सीआरपीएफ की तैनाती का विरोध करो !

बस्तर में जारी क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए केन्द्र सरकार ने सीआरपीएफ की दो बटालियनें भेजने का फैसला लिया। एक लम्बे अरसे से छत्तीसगढ़ सरकार इसकी मांग कर रही थी। अब ये बल संघर्ष के इलाकों में भेजे जा रहे हैं। तीन माह पहले राज्य सरकार ने नारायणपुर को पुलिस जिला बनाया और दन्तेवाड़ा में एक पुलिस उप-महानिदेशक को भी नियुक्त किया। इस तरह अब अविभाजित बस्तर में कुल 5 पुलिस जिले बन गए – कांकेर, नारायणपुर, जगदलपुर, दन्तेवाड़ा और बीजापुर। साथ-साथ कई नए थाने भी खोले जा रहे हैं।

पिछले 23 वर्षों से बस्तर में क्रांतिकारी आन्दोलन जारी है। बस्तर की हजारों जनता क्रांतिकारी जन संगठनों में संगठित होकर अपनी समस्याओं के समाधान के लिए लड़ रही है। सैकड़ों नौजवान हथियारबन्द होकर पीजीए बलों में शामिल हो रहे हैं। इसके अलावा हजारों युवक-युवतियां जन मिलिशिया में भर्ती होकर इस शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं। सदियों से शासक वर्गों ने बस्तरवासियों का शोषण ही किया है। असीम प्राकृतिक सम्पदाओं से भरपूर बस्तर के बाशिन्दे भयंकर गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, बीमारी आदि समस्याओं से जूझ रहे हैं। क्रांतिकारी आन्दोलन के तहत जनता ने अपने विकास का बीड़ा खुद के कंधों पर लिया है। साम्राज्यवादी और सामंती शोषण के खिलाफ बस्तरवासियों ने कई लड़ाइयां लड़ीं। अब दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य से आगे बढ़ता यह आन्दोलन देशवासियों के सामने एक वैकल्पिक नमूना पेश कर रहा है। एक शब्द में कहा जाए तो आज देश की तमाम उत्पीड़ित जनता दण्डकारण्य की ओर आशा की निगाहों से देख रही है, जिसका बस्तर एक बड़ा हिस्सा है।

केन्द्र और राज्य सरकारों की यही कोशिश है कि इस विकासशील वैकल्पिक नमूने को लौह पैरों से रौंद दिया जाए। यहां पर उदीयमान जनता की नई राजसत्ता का गला घोंट दिया जाए। इसीलिए इस आन्दोलन को फौजी तौर पर कुचलने को उतावले हो रही हैं। हालांकि छत्तीसगढ़ सरकार ने हमारी पार्टी के साथ वार्ता के लिए कई बार पेशकश की थी। उसने हमारे आन्दोलन को राजनीतिक और सामाजिक समस्या भी कहा था। लेकिन अब उसकी मंशा जनता के सामने साफ तौर पर जाहिर हो गई। हम शुरू से ही कहते आ रहे हैं कि छत्तीसगढ़ सरकार को बातचीत में दिलचस्पी नहीं है। वह सिर्फ दिखावे के लिए ही वार्ता का नाटक करती आ रही थी।

हम तमाम शोषित और उत्पीड़ित जनता से तथा जनता का पक्षधर बुद्धिजीवियों से आग्रह करते हैं कि बस्तर में सीआरपीएफ की तैनाती का विरोध करें तथा उसे तत्काल वापिस लेने की मांग करें। बस्तर जनता के जायज आन्दोलन का समर्थन करें। हम सरकार को चेतावनी देते हैं कि दमन प्रतिरोध को ही जन्म देता है और बस्तर की संघर्षशील जनता अर्ध-सैनिक बलों का भी बहादुरी के साथ मुकाबला करेगी। जनता अपनी सेना – पीजीए की अगुवाई में सीआरपीएफ के खिलाफ लड़कर दण्डकारण्य को मुक्तांचल में बदल कर ही दम लेगी।

(कोसा)

सचिव

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

28-02-2003 **भाकपा (मा-ले) [पीपुल्स वार]**

दण्डकारण्य के संघर्ष-पथ पर ...

गड़चिरोली बांस कटाई मजदूरों का संघर्ष सफल

पेपर मिल के लिए बांस काटने वाले मजदूरों ने अपनी संगठित ताकत के बल पर मजदूरी दरें बढ़ा लीं। एटापल्ली और कसन्सूर रेंजों की जनता ने संघर्ष कमेटी के नेतृत्व में मिल अधिकारियों से मजदूरी दरों में बढ़ोत्तरी के सवाल पर बातचीत की। कुल 165 जनता ने बातचीत में भाग लिया। बातचीत में मिल अधिकारियों ने जनता की मांगें मान लेते हुए निम्नांकित दरें देने को घोषणा की।

बढ़ी हुई दरें	**(रूपयों में)**
कटाई-ढुलाई प्रति बन्डल	7.70
बन्धाई प्रति 100 बन्डल	44.00
दैनिक मजदूरी	64.00
चावल का दाम (प्रति किलो)	6.00
काम के दौरान मजदूर की मृत्यु होने पर मुआवजा	1 लाख

इस संघर्ष की सफलता से मजदूरों को जहां एक ओर आर्थिक रूप से अपनी स्थिति को सुधारने का मौका मिला, वहीं दूसरी तरफ उन्हें अपनी संगठित ताकत पर विश्वास दुगुना हो गया।

पुलिस की ज्यादतियों और अवैध गिरफ्तारियों के खिलाफ थाने में धरना

गड़चिरोली जिले के अहेरी इलाके में मरपल्ली पुलिस थाने में 10 दिसम्बर 2002 को जनता ने धरना दिया। अहेरी इलाके में पिछले डेढ़ साल से पुलिस का आतंक मचा हुआ है। गद्दार आनन्द की सूचना पर पुलिस ने लगभग हरेक गांव से दसियों लोगों को गिरफ्तार किया। सैकड़ों लोगों को अमानवीय यातनाएं दीं और कुछ लोगों को जेल भेज दिया। जंगल में लकड़ी लाने या मवेशी चराने या अन्य किसी काम पर कोई व्यक्ति जाता है तो गश्ती पुलिस उसे मारपीट कर रही है। इस क्षेत्र में मारपीट और गिरफ्तारियां एक आम बात हो चुकी है।

(शेष पृष्ठ 18 पर ....)

"भूख से मरने से बेहतर है लड़कर मरना"

क्रांतिकारी आन्दोलन के इलाकों की जनता ने राह दिखाई

हाल ही में सर्वोच्च अदालत ने राज्यों और केन्द्र-शासित प्रान्तों को दिए एक आदेश में कहा कि भूख और कुपोषण से होने वाली मौतों को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। यह आदेश उस रिपोर्ट के बाद दिया गया, जिसे अदालत द्वारा पिछले साल के मई माह में नियुक्त आयुक्तों ने पेश किया। इन आयुक्तों को गरीबों और दबे-कुचले लोगों के लिए निर्देशित विभिन्न गरीबी उन्मूलक और काम के बदले अनाज के कार्यक्रमों के अमल को सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया गया।

इसके बावजूद देश भर में अकाल एवं भूख ने भारी तादाद में लोगों की जाने लीं। चाहे राजस्थान हो या फिर बिहार, झारखण्ड, उडीसा, आन्ध्र कहीं भी हो भूखमरियों का सिलसिला लगातार जारी है। पिछले साल जब उड़ीसा में भूख से मौतें हुईं थीं तब उड़ीसा सरकार ने इन मौतों के लिए कारण जनता द्वारा आम फलों के भीतरी भाग को खाना बताया। इसी तरह, कुछ साल पहले कालाहंडी जिले में जब भूख से कई लोगों की मौत हुई थी, तब भी सरकार ने इसे साफ नकार दिया था और जहरीले कंदमूलों को खाने के लिए जनता को ही इसका दोष दिया था। अब राजस्थान, बिहार और आन्ध्र में भी ठीक वही दोहराया जा रहा है। वहां की सरकारें इन मौतों का कारण कुपोषण, लोगों की अनुचित खाने की आदतें और पेट सम्बन्धी बीमारियां ठहराने के लिए काफी धन खर्च रही हैं।

लेकिन उन इलाकों में जहां इस व्यवस्था को बदलने के लिए क्रांतिकारी आन्दोलन चल रहा है, स्थिति पूरी तरह अलग है। हालांकि वहां भी भूख है, लेकिन भूख से मौतें नहीं हो रही हैं। नीचे हम कुछ उदाहरण पेश कर रहे हैं जो यह बताते हैं कि किस तरह वहां की जनता इस शोषणकारी व्यवस्था द्वारा थोपी गई भूख से पेश आ रही समस्याओं से निपट रही है।

पिछले साल अक्टूबर और नवम्बर महीनों में आन्ध्रप्रदेश के गुन्टूर जिले की जनता ने पीपुल्सवार पार्टी की अगुवाई में सामंतों और सरकारी गोदामों पर कई आहार हमले किए। 31 अक्टूबर को 200 स्त्री-पुरुषों ने परम्परागत हथियारों से लैस होकर जिले के माचवरम मण्डल के मोर्जमपाडु गांव में हमला बोल दिया। वे दो मिनी ट्रालियों और 10 ट्रेक्टरों पर सवार थे। उन्होंने 15 सामंती परिवारों के गोदामों पर हमला करके धान के अलावा खाद की

दण्डकारण्य जनता द्वारा अकाल-हमले

दण्डकारण्य के दक्षिण बस्तर के कई गांवों में जनता भयानक अकाल की स्थिति से जूझ रही है। मानसून के आने में हुई देरी और अल्पवृष्टि के कारण से कई खेतों में बोआई तक नहीं हो सकी। अकाल और भुखमरी की यह दास्तान सिर्फ इस साल की नहीं, बल्कि कई सालों से चलती आ रही है। अकाल की गम्भीरता को समझने के लिए एक उदाहरण काफी है कि किष्टारम एरिया में निम्मलागुडेम, जारपाडु, आदि गांवों में एक बोरा धान भी नहीं आया। ऐसी स्थिति में कई लोगों को आन्ध्र में पलायन करना पड़ा ताकि मजदूरी काम करके पेट पाला जा सके।

इस स्थिति से निपटने के लिए दक्षिण बस्तर डिवीजन पार्टी ने जमींदारों पर अकाल हमले करके अनाज छीन लेने का आह्वान दिया। इसके तहत जन संगठनों की अगुवाई में बस्तर के सीमान्त में स्थित ग्राम अर. कोत्तागूडेम (खम्मम जिला – आन्ध्रप्रदेश) के जमींदारों पर जनता ने अकाल हमला किया। कुल 18 गांवों से 520 लोगों ने इस हमले में भाग लिया और 300 क्विन्टल धान जब्त कर लिया। यह हमला 28 नवम्बर 2002 को सम्पन्न हुआ। ग्राम चेरुपल्ली के तीन जमींदार परिवारों की खलिहानों पर 300 लोगों ने हमला करके 200 क्विन्टल धान छीन लिया। ग्राम चिन्ना नल्लाबेल्ली में 220 लोगों ने अकाल-हमला करके 15 क्विन्टल लाकर आपस में बांच लिया। 29 दिसम्बर को सुन्नमगुडा में 200 लोगों ने हमला किया। लोग अपने साथ 18 बैलगाडियां ले गए थे। यहां से 25 क्विन्टल धान, मवेशी और अन्य सामग्रियां छीनकर लाए थे।

कुल मिलाकर इन 4 हमलों में 1200 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। इन हमलों को लेकर आन्ध्र के शासक वर्गों में खलबली मच गई। जमींदारों ने पुलिस की शरण ली। पुलिस ने गहन खोजबीन अभियान चलाए। लोगों की व्यापक गिरफ्तारियां कीं। इसके बावजूद लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ। 'भूख से मरने के बजाए लड़कर मरना बेहतर है' – यह है नारा दण्डकारण्य में आज जनता का। ❖

'काम के बदले अनाज' कहां जा रहे हैं ?

हाल ही में आन्ध्रप्रदेश के एक गांव में चावल का एक बहुत बड़ा अवैध भण्डार पकड़ा गया। कंदुकूर मण्डल के राचलूर गांव के निकट एक वीरान मुरगी फारम पर सरकारी अधिकारियों ने छापा मारकर 527 क्विन्टल चावल जब्त कर लिया गया। यह छापा जिले के सहायक कलेक्टर की अगुवाई में मारा गया। यह चावल 'काम के बदले अनाज' योजना के तहत ग्रामीणों को बांटा जाना था। इस घोटाले के बारे में स्थानीय जनता ने जब पुलिस में शिकायत की तो पुलिस ने मामला दर्ज करने से इनकार किया था। बाद में जनता ने जब कलेक्टर और विपक्षी कांग्रेस नेताओं से शिकायत की, तब जाकर इस पर कार्रवाई की गई। इस लूट के पीछे कई शक्तिशाली लोगों का हाथ है। इसमें सरपंच से लेकर उचित मूल्य दुकान के संचालक तक सभी का योगदान है। शासक वर्गों के राजनेताओं ने इस घोटाले को लेकर एक-दूसरे पर खूब कीचड़ उछाला। लेकिन न तो लूट की मात्रा का आंकलन किया गया, न ही किसी को गिरफ्तार किया गया। अभी तक दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। यह देश भर में हो रहे घोटालों और लूट का एक छोटा-सा उदाहरण भर है। ❖

बोरियां भी जब्त कर लीं। जनता ने सूदखोरों के घरों पर हमला करके अपने सारे जेवर छुड़ा लिए। कुल मिलाकर उन्होंने 250 क्विन्टल धान अपने साथ लाए ट्रैक्टरों और ट्रालियों में लादकर लाए।

जहां एक तरफ गांवों में लोग भयंकर सूखे के चपेट में थे और भूख से तड़प रहे थे, वहीं दूसरी तरफ भ्रष्ट राजनेता और अधिकारी 'काम के बदले अनाज' को लूटकर मालामाल होने लगे थे। लाखों-करोड़ों रूपए का चावल उन्होंने अवैध ढंग से जमा किया। जनता ने इस भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हुए कई जगहों पर अकाल हमले किए और चावल को अपने कब्जे में लिया। इस तरह जनता ने जमाखोरों और भ्रष्ट नेता-अफसरों को मुंहतोड़ जवाब दिया। गुन्टूर जिले में अगस्त-नवम्बर के बीच कुल मिलाकर 12 अकाल हमले किए गए। इस दरमियान जनता ने 275 टन 'काम के बदले अनाज' को जब्त कर लिया। इसके अलावा दो गांवों में जनता ने सामंतों और व्यापारियों पर हमले करके करीबन 1 करोड़ रूपए के चावल और अन्य सामान जब्त कर लिए। हालांकि बाद में पुलिस ने गांवों में छापेमारियां करके 100 टन सरकारी चावल जनता से छीन लिया, लेकिन सामंतों पर किए गए हमलों से जब्त सामानों को पकड़ने में पुलिस असफल रही।

दण्डकारण्य में दक्षिण बस्तर डिवीजन की सूखाग्रस्त जनता ने पीपुल्सवार पार्टी की अगुवाई में इसी प्रकार के हमले किए। 28 नवम्बर को सैकड़ों आदिवासी स्त्री-पुरुषों ने कोत्तागूडेम गांव के जमींदारों के घरों पर धावा बोलकर धान जब्त कर लिया। *(देखें बॉक्स पृष्ठ 22 में)*

इन घटनाओं के बाद सरकार ने व्यापक दमनचक्र छेड़ दिया। बड़े पैमाने पर खोजबीन अभियान शुरू करके बेकसूर जनता को प्रताड़ित करना शुरू कर किया। जनता के साथ मारपीट और गिरफ्तारियों का सिलसिला जारी है। जनता इस दमन के लिए पहले ही तैयार हो गई। उनके सामने यही एक विकल्प बचा था, वरना भूख से मरने की नौबत आ सकती है।

सरकार ने अकाल हमलों को लूट की संज्ञा देकर, इस तरह के विद्रोहों पर काबू पाने के लिए हर सम्भव कदम उठाया। महत्वपूर्ण गांवों में पुलिस चौकियां खोली गईं और थानों में पुलिस वालों की संख्या बढ़ाई गई ताकि जनता की क्रांतिकारी पहलकदमी को खत्म किया जा सके। पर सच तो यह है कि सभी राज्यों और केन्द्र सरकारें खुद ही घोटालों की बाढ़ में गले तक फंसी हुई हैं। किसी पर चारा घोटाले का आरोप है तो किसी और पर यूरिया और उर्वरकों के आयात में हेराफेरी का मुकदमा चल रहा है। किसी को चीनी के आयात के घोटाले में लिप्त पाया गया तो किसी और का नाम रक्षा विभाग के घोटाले में शामिल है। लेकिन उन्हें घोटालों के आरोपों से साफ तौर पर बरी किया जा रहा है ताकि वे जनता को और लूट सकें। वे ही असली लूटेरे हैं जिन्हें इस व्यवस्था ने वैधता दिलाई। अकाल हमलों में भाग लेने वाले लोग चोर नहीं हैं, डाकू नहीं हैं। वे अपनी भूख मिटाने के लिए ये हमले कर रहे हैं, न कि बंगला बनाने या गाड़ी खरीदने के लिए। और वे ये हमले जमींदारों और लुटेरे सूदखोरों पर ही कर रहे हैं। और जो अनाज या अन्य सामान वे जब्त कर रहे हैं, उनका असली मालिक खुद वे ही हैं क्योंकि उनकी मेहनत से ही जमींदारों की कोठियां भरती हैं और लुटेरों की तिजोरियों में नोट बढ़ते हैं। इसलिए जनता के ये अकाल हमले बिलकुल जायज और उन्हें ऐसा करने का पूरा अधिकार है। और ये हमले तब तक होते रहेंगे जब तक कि हर प्रकार की असमानता और लूट का अन्त नहीं हो जाता।

क्रांतिकारी आन्दोलन के क्षेत्रों में रहने वाली जनता देश के अन्य क्षेत्रों में भुखमरी के कगार पर जी रही जनता को राह दिखा रही है कि रोटी की तलाश में इधर-उधर भटकना नहीं चाहिए, बल्कि एकजुट होकर लुटेरों पर हमले करके अनाज छीन लेना चाहिए। जोकि वास्तव में जनता की मेहनत का फल है। क्रांतिकारी पार्टी का यह फर्ज है कि वह इस दिशा में जनता की चेतना बढ़ाए और इस व्यवस्था को जड़ों से बदलने के लक्ष्य से उसे एकताबद्ध करे। ❖

(.... अन्तिम पृष्ठ का शेष)

केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी एक अपील

अत: 11 सितम्बर के बाद से साम्राज्यवादी आक्रमण, खासकरके अमेरिकी साम्राज्यवादी आक्रमण दुनिया भर की जनता के सामने अभूतपूर्व रूप से सबसे भयंकर खतरा बन कर उभरा है। एकलौती महाशक्ति, अमेरिकी साम्राज्यवाद दुनिया की जनता का दुश्मन नम्बर एक है। लगभग सभी दलाल सरकारें भी तथाकथित आतंकवाद के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धन का हिस्सा बन चुकी हैं और अपने देशों में सभी जनवादी तथा क्रान्तिकारी आन्दोलनों का दमन करने के लिए फासीवादी तरीकों को अमल में लाने लगी हैं। दुनियाभर में जन आन्दोलनों का एक ज्वार सा फूट पड़ा है - यह आज की दुनिया में सभी प्रकार के मूलभूत अन्तरविरोधों के तीखे होने की अभिव्यक्ति है।

साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्थाओं में संकट के चलते महत्त्वपूर्ण साम्राज्यवादी ताकतों, खासतौर पर अमेरिका व यूरोप के बीच आपसी अन्तरविरोध बढ़ रहे हैं। यह मात्र व्यापार के क्षेत्र में ही प्रतिबिम्बित नहीं हो रहा है बल्कि भू-राजनीतिक क्षेत्र में भी हो रहा है, जैसे कि फिलिस्तीन व इराक आदि के सवाल पर। अमेरिका इस प्रतिद्वन्द्विता को अपनी ताकत के बल से तथा दुनिया के अन्य देशों के खिलाफ एकतरफा कार्यवाहियों के माध्यम से एक सीमित दायरे में रखना चाहता है। यह खास तौर पर इराक के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रस्ताव लेने के दौरान हुई रस्साकस्सी से साफ जाहिर है, जहां अन्तत: समझौता करके एक प्रस्ताव पास किया गया। लेकिन जैसे-जैसे आर्थिक संकट गहराएगा, इन अन्तरविरोधों का तीखे होते जाना अवश्यमभावी है। इसके परिणामस्वरूप दुनिया में जनता के आन्दोलनों के लिए और ज्यादा अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी।

पश्चिम एशिया में, फिलिस्तीनी इलाकों में इन्तिफादा (फिलिस्तीनियों का आन्दोलन) के जारी रहने से एक विस्फोटक स्थिति विकसित हो गई है। शियोनवादी इज्राइल ने पश्चिमी किनारे, गाजा पट्टी और फिलिस्तीनियों के अन्य इलाकों पर फासीवादी हमले शुरू कर दिए हैं। अमेरिकी साम्राज्यवादी जो अभी तक फिलिस्तीन में जुझारू मुक्ति आन्दोलन को दबाने के लिए अराफात के भरोसे थे, अब उन्होंने सीधे-सीधे इज्राइल के माध्यम से यह काम करना शुरू कर दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ तथाकथित युद्ध, फिलिस्तीनी क्षेत्रों पर क्रूरतम हमला शुरू करने के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादियों तथा इज्राइली विस्तारवादियों के हाथ में एक अचूक हथियार के रूप में साबित हुआ है। अमेरिकी तथा इज्राइली फासीवादी शासकों का तुष्टीकरण करने और इन हमलों के खिलाफ कोई भी प्रतिरोध खड़ा न करने की अराफात की नीति ने उसकी विश्वसनीयता को घटा दिया है। साथ ही पी.एल.ओ. की भी। इसकी वजह से फिलिस्तीनी लड़ाकुओं के कई सारे जुझारू व हथियारबन्द संगठन खड़े हो गए हैं। फिलिस्तीनियों द्वारा आत्मघाती हमले रोजमर्रा की बात हो गए हैं। इज्राइली टैंकों द्वारा फिलिस्तीनियों के घरों को तहस-नहस करना और फिलिस्तीनी आबादी, गुस्से व अशांति को समाप्त करने के उसके प्रयासों ने अरब दुनिया को अन्दर तक कुरेद दिया है और उनमें फिलिस्तीनी उद्देश्य के प्रति हमदर्दी बढ़ती जा रही है। आज अरब दुनिया में इज्राइल एकदम अलग-थलग पड़ गया है और दुनियाभर की जनता द्वारा इसकी क्रूर हरकतों की भर्त्सना की जा रही है।

आर्थिक संकट के चलते राजनीतिक संकट गहरा गया है और जन असंतोष व्यापक स्तर पर गलियों में उतर गया है तथा जनता व सैन्य बलों के बीच हथियारबंद झड़पें हो रही हैं। इटली के जिनोआ में हुए व्यापक प्रदर्शन के परिणामस्वरूप वहां पुलिस के साथ जुझारू झड़पें हुईं; ग्रीस व अन्य दूसरे स्थानों पर विश्व बैंक-आई.एम.एफ. तथा डब्ल्यू.टी.ओ. के खिलाफ बड़े पैमाने के प्रदर्शन हुए; यूरोप व रूस में मजदूरों की हड़तालें विश्व स्तर पर पूंजी व श्रम के बीच बढ़ते अन्तरविरोध की ओर इशारा करते हैं।

विश्व आर्थिक परिस्थिति और सम्भावनाएं-2003 द्वारा 9 जनवरी को जारी रिपोर्ट के मुताबिक .....

- **वर्ष 2002 में विश्व अर्थव्यवस्था में महज 1.7% वृद्धि दर्ज की गई। यह दूसरे विश्वयुद्ध के समापन के बाद घोषित अब तक की सबसे कम वार्षिक दर है।**
- **विश्व व्यापार में 2% से भी कम वृद्धि हुई है।**
- **यूरोपीय यूनियन की वृद्धि दर महज 1% रही।**
- **अमेरिका की वृद्धि दर मात्र 2.4% रही।**
- **जापान की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) दर में गिरावट लगातार जारी है।**

11 सितम्बर को इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा डब्ल्यू.टी.सी. व पेंटागन पर किए गए हमले, जिसने अमेरिकी साम्राज्यवाद के वित्तीय तथा सैन्य ताकत को प्रभावित किया, ने अमेरिकी साम्राज्यवाद की दयनीयता को प्रमाणित कर दिया। भले ही इसने अमेरिकी साम्राज्यवाद को दुनिया की जनता के खिलाफ हमला शुरू करने का मौका दिया, फिर भी इसने दुनिया की जनता को उत्साहित किया। इन घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप, अमेरिकी साम्राज्यवाद और ज्यादा अलगाव में पड़ गया है तथा दुनियाभर में शत्रु नम्बर एक के तौर पर बेनकाब हुआ है, और दुनियाभर की जनता के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे इसके खिलाफ एक व्यापक मोर्चा बनाएं। विश्व स्तर पर साम्राज्यवाद के खिलाफ, विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ जनता के आन्दोलन की तीव्रता शक्ति के आधार पर बढ़ रही है। ब्रिटेन, अमेरिका, इटली और यूरोप में यहां-वहां हुई विशालकाय रैलियां, भूमण्डलीकरण की नीतियों और अमेरिकी आक्रामक युद्ध-पिपासा के खिलाफ विकसित देशों की जनता के असंतोष की सीमा को दर्शाती हैं।

नेपाल, भारत, पेरू, फिलीपीन्स और तुर्की में माओवादियों के नेतृत्व में चल रहे लोकयुद्ध; फिलिस्तीन, कश्मीर, चेचन्या आदि में जारी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन; और अपनी ज्वलन्त समस्याओं, जो साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण और दलाल बड़े पूंजीपतियों तथा साम्राज्यवादियों द्वारा अन्धाधुन्ध लूट के कारण बढ़ती ही जा रही हैं, पर जनता के उमड़ते संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तीखे होते अन्तरविरोधों की ओर इशारा करते हैं।

दक्षिण एशिया एक उबलता हुआ अग्निकुण्ड बन गया है। नेपाल में जारी लोकयुद्ध नई ऊंचाइयों को छू चुका है। पिछले नवम्बर में आपातकाल लागू करना और नेपाल में साम्राज्यवादियों खासकर अमेरिकी तथा भारतीय विस्तारवादियों की सहायता व उनके उकसावे में आकर शाही नेपाल सेना व अन्य सुरक्षा बलों द्वारा की गई गहन कार्यवाहियां

एकदम असफल साबित हुईं। हजारों बेगुनाह लोग मारे जा चुके हैं और कई हजार गिरफ्तार किए जा चुके हैं। इस सब के बावजूद भी नेपाल में लोकयुद्ध नित नई ऊंचाइयों को छू रहा है और नेपाली शासक वर्गों तथा भारतीय विस्तारवदियों व उनके साम्राज्यवादी आकाओं के दिलों में दहशत पैदा कर रहा है।

भारत पर संकट का प्रभाव

इन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों का भारतीय अर्थव्यवस्था तथा राजनीतिक परिदृश्य पर भी खासा प्रभाव पड़ा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में संकट और भी ज्यादा गहरा गया है। साम्राज्यवादियों द्वारा संचालित भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण का असर देश में हर कहीं जनता महसूस कर रही है। सूखे ने जनता के व्यापक हिस्से की जिन्दगी को तबाह कर दिया है और कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट ने न केवल मध्यम किसान बल्कि धनी किसानों के भी एक बड़े हिस्से की कमर तोड़ दी है। कुलाचें भरती बेरोजगारी और मजदूरी में कटौती ने मजदूर वर्ग तथा मध्यम वर्ग के एक बड़े हिस्से की जिन्दगी को नरक बना दिया है। लाखों देसी छोटे व्यवसायों को तबाही की गर्त में धकेल दिया गया है। सामाजिक कल्याण की योजनाओं में जबरदस्त कटौती, बचत पर ब्याज दर में कटौती और बैंकिंग व निवेश क्षेत्र में घोटालों, धोखाधड़ी तथा सीधे-सीधे डकैती के माध्यम से जनता की बचत की हिंसक लूट ने जनता की असुरक्षा की भावना तथा मुसीबतों में इजाफा ही किया है। यह सब गंभीर राजनीतिक व सामाजिक संकट पर ओले के समान बरसा है।

अब से करीब पांच साल पहले लाखों छोटे पैमाने के उद्योगों को बंद करके और यहां तक कि बड़े उद्योगों को भी दानवाकार अन्तर्राष्ट्रीय निगमों द्वारा निगल लिए जाने के बाद देश की अर्थव्यवस्था को ठहराव की स्थिति में धकेल दिया गया था। प्रमुख वित्तीय संस्थान (आई.डी.बी.आई., आई.एफ.सी.आई., यू.टी.आई.) दिवालिया होने की स्थिति में हैं, इन्हें जिन्दा रखने के लिए सरकार को करदाताओं के पैसे में से 30,000 करोड़ रुपये इनमें लगाने पड़े हैं। राज्य व केन्द्रीय दोनों ही स्तर पर सरकारें गले-गले तक कर्जे के बोझ में डूबी हुई हैं, जिसका परिणाम है कि यहां का समग्र बजट घाटा देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के 10 प्रतिशत के बराबर है। यह संकट भी उसी अनुपात में गहरा रहा है जिस तेजी से राज्य व केन्द्र सरकार के स्तर पर सुधारों को लागू किया जा रहा है।

देश में बढ़ता हुआ आर्थिक संकट तेजी से एक स्थाई राजनीतिक संकट बना रहा है, जहां केन्द्र व राज्य स्तर पर अधिकतर सरकारें अवसरवादी गठजोड़ या बाल भर बहुमत के माध्यम से जीवित हैं। जहां केन्द्र में भाजपा की जीवन डोर 20 से भी ज्यादा पार्टियों के हाथ में हैं, वहीं अधिकतर राज्यों में गैर-भाजपा सरकारें मौजूद हैं। इन पार्टियों के बीच पागलपन की हद तक कुत्ता-घसीट, जिसमें तथाकथित शुद्ध संघ परिवार भी शामिल है, दर्शाती है कि संकट कितना गहरा गया है।

आर्थिक व राजनीतिक संकट से उबर पाने तथा जनता का ध्यान इस ओर से हटाने; साम्राज्यवादियों द्वारा संचालित दूसरे दौर के सुधारों को लागू करने; और सबसे महत्त्वपूर्ण, संघर्षरत जनता के खिलाफ फासीवादी दमन शुरू करने की नीयत से केन्द्र में सत्तासीन भाजपा के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार पूरे जोर शोर से अपना फासीवादी एजेण्डा लागू कर रही है। वे पाकिस्तान विरोधी उन्मान्द भड़का रहे हैं और एक समय पर तो इन्होंने देश के पाकिस्तान के साथ युद्ध की कगार पर लाकर भी खड़ा कर दिया था। वे सीमा पार से आतंकवाद पर रोक लगाने के नाम पर पाक अधिकृत कश्मीर में कैम्पों पर पहले से ही हमला करने की साजिश रच रहे हैं और कश्मीरी जनता के संघर्ष को सीमा पार के "आतंकवादियों" की पैदाइश के तौर पर प्रदर्शित कर रहे हैं। सिमी जैसे मुस्लिम संगठनों पर प्रतिबंध लगाने व हमला करने, केन्द्र में पोटो और कई अन्य काले अध्यादेशों तथा राज्यों में कई कानूनों को लागू करने और फासीवादी दमन फैलाने के लिए वे आतंकवाद के विरुद्ध चलाए जा रहे तथाकथित युद्ध (जो अन्य क्रान्तिकारियों व जनान्दोलनों के अलावा मुस्लिम जनता के खिलाफ भी निर्देशित है) का इस्तेमाल कर रहे हैं। भारतीय शासक वर्ग ने फासीवादी कानूनों को लागू करने और आतंकवाद का मुकाबला करने तथा देश की अखण्डता व एकता की रक्षा के नाम पर व्यापक दमन चलाने के लिए भारतीय संसद पर हुए 13 दिसम्बर के हमले का बखूबी इस्तेमाल किया। हिन्दू फासीवादी ताकतों ने हिटलर के सामूहिक हत्याकाण्डों की याद ताजा करते हुए गुजरात में हुए नरसंहार में मुस्लिम जनता को जड़ से मिटाने के लिए अपने शस्त्रागार से बहुत ही घृणित हथियार – हिन्दू साम्प्रदायिकता का अस्त्र – निकाला है। गुजरात में हुए ये हमले दिखाते हैं कि यदि आने वाले समय में भाजपा के नेतृत्ववाली फासीवादी ताकतों को बिना किसी मजबूत प्रतिरोध के अपना फासीवादी एजेण्डा लागू करने की इजाजत दे दी जाती है तो देश की क्या शक्ल होने वाली है। इसके चलते मुस्लिम कट्टरपंथियों को सामने आने का मौका मिल रहा है, और भारतीय शासक वर्ग की यह दिली तमन्ना है।

भारत में शासक वर्गों और अमेरिकी प्रशासन के बीच गठजोड़ बढ़ता जा रहा है। यह सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है, खासकरके, इन्टैलीजेन्स और सैनिक क्षेत्र में। इज्राइल ने भी खासतौर पर इन्टैलीजेन्स के क्षेत्र में गठजोड़ कायम कर लिया है, और आज की तारीख में वह भारत को हथियारों की आपूर्ति करने वाला दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा देश है।

खासतौर पर, आन्ध्रप्रदेश में, साम्राज्यवादी चमचे, नायुडू द्वारा साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों के बहुत ही स्वामीभक्तिपूर्णता से लागू किए जाने के परिणामस्वरूप, समस्याओं की तीव्रता के चलते, जनता के सभी हिस्सों द्वारा बहुत ही तीखे रूप से इस संकट को महसूस किया जा रहा है। आत्महत्याओं में बढ़ोतरी हो रही है। आर.टी.सी., बिजली बोर्ड और अन्य संस्थानों के मजदूर बड़ी संख्या में सड़कों पर उतर रहे हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था बुरे तरीके से डांवाडोल है और 40,000 करोड़ रुपये के कर्जे में डूबी हुई है। नायुडू सरकार द्वारा साम्राज्यवादियों की निर्देशित नीतियों के अनुपालन के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद-विरोधी, खासकरके, विश्व बैंक-विरोधी व डब्ल्यू.टी.ओ. विरोधी चेतना बड़ी तेजी से व्यापक पैमाने पर जनता के बीच फैल रही है। हमारी पार्टी द्वारा चलाये जा रहे लोकयुद्ध ने बड़ी तेजी से जनता में क्रान्तिकारी बदलाव ला दिया है, जिसे जन आन्दोलनों में आई अचानक तेजी में देखा जा सकता है।

दण्डकारण्य में, अलग राज्य छत्तीसगढ़ बनने के बाद भी, जनता की स्थिति और भी ज्यादा बदतर हो गई है, यहां सरकार विश्व बैंक की नीतियों को लागू करने के लिए एकदम दण्डवत हो गई है। जहां सूखे ने देहातों की स्थिति को तबाह कर दिया है, वहीं सरकार विदेशी बाजार

के लिए पर्यटन व उद्यानों को बढ़ावा देने में व्यस्त है। विशालकाय एल्यूमीनियम प्लांट, बाल्को को कौड़ियों के दाम बेच दिया गया है, और साम्राज्यवादियों व दलालों के हित में यहां के सम्पन्न कच्चे माल की सम्पदा को निचोड़ने के लिए कई तरह की परियोजनाएं स्थापित की जा रही हैं। इसके अलावा, दमन चक्र चलाने के लिए भारी मात्रा में धनराशि लगाई जा रही है, राज्य में जारी लोकयुद्ध को कुचलने के लिए तीन बटालियनें स्थापित की गई हैं। पड़ोस में महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले को तो लगभग पुलिस कैम्प में ही तब्दील कर दिया गया है, पिछले एक दशक से गांवों तथा अन्दरूनी जंगली इलाकों में 3,500 विशेष रूप से प्रशिक्षित पुलिसवाले गश्त पर लगे हुए हैं। फर्जी मुठभेड़ों में सैकड़ों लोग मारे जा चुके हैं, कई हजारों को गिरफ्तार करके यातनाएं दी गई हैं, और अभी हाल ही में जिले के अकेले अहिरी क्षेत्र में ही 1000 से भी ज्यादा ग्रामीणों को गिरफ्तार किया गया तथा सैकड़ों लोगों की बिना बात पिटाई की गई।

झारखण्ड में, भाजपा की मरांडी सरकार द्वारा सत्ता सम्भालने के साथ ही राज्य में जनआन्दोलनों पर अभूतपूर्व पैमाने पर फासीवादी दमन शुरू हो चुका है। सी.पी.आई. (एम-एल) [पीपुल्स वार] तथा एम.सी.सी. के सैकड़ों कैडरों व हमदर्दों की नृशंसतापूर्ण हत्याएं की जा चुकी हैं। बिहार-झारखण्ड क्षेत्र में, सामन्ती ऊंची जातियों की रणवीर सेना और साथ ही संशोधनवादी सी.पी.आई. (एम-एल) (लिबरेशन) द्वारा किए जा रहे जनसंहारक हमलों ने सरकार द्वारा किए जा रहे घृणित अपराधों में और इजाफा ही किया है।

भारत में, मजदूरों, किसानों और आबादी के अन्य हिस्सों द्वारा निजीकरण तथा उदारीकरण की नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों में बढ़ोतरी हो रही है। पिछले साल पश्चिमी औद्योगिक बैल्ट में मजदूरों द्वारा महत्त्वपूर्ण संघर्ष और हरियाणा में भाकियू के नेतृत्व में किसानों द्वारा संघर्ष मजदूरों व किसानों के बीच व्याप्त उबलते हुए असंतोष को दर्शाता है। मजदूरों व किसानों में साम्राज्यवाद विरोधी चेतना विकसित होती जा रही है और साथ ही विकसित हिस्सों की आंखों के सामने विश्व बैंक, आई.एम.एफ. तथा डब्ल्यू.टी.ओ. की भूमिका भी नंगे रूप में उभर कर आ गई है।

कश्मीर का जलना जारी है। लाखों सैनिक व अर्द्ध सैनिक बलों को वहां तैनात किया गया है और कश्मीरी नौजवानों को गाजर मूली की तरह काटा जा रहा है। चुनाव की नौटंकी कश्मीरी जनता पर थोपी गई और उन्हें बंदूक की नोक पर मतदान करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। सशस्त्र पुलिसवालों द्वारा अमानवीय अत्याचार व यातनाएं झेलने के बावजूद भी कश्मीरी नागरिक दृढ़ता व साहस के साथ अपना संघर्ष जारी रखे हुए हैं, संघर्ष के कई रूपों का इस्तेमाल कर रहे हैं और सैन्य व अर्द्ध सैन्य कैम्पों व गश्ती दलों पर जांबाज हमले कर रहे हैं। पूर्वोत्तर का आन्दोलन, हालांकि अभी निचले दर्जे पर है, फिर भी नागा नेतृत्व द्वारा घुटने टेक देने के बावजूद भी जारी है। ईलम आन्दोलन, हालांकि अभी समझौते की ओर जा रहा है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि, श्रीलंका में रहने वाली तमिल जनता हिंसक क्रान्ति के माध्यम से एक बार फिर अपने अधिकारों के लिए उठ खड़ी होगी।

भारत में, एक ओर सी.पी.आई. (एम-एल)[पीपुल्स वार] तो दूसरी ओर एम.सी.सी. के नेतृत्व में जारी लोकयुद्ध विकसित हुआ है। दोनों पार्टियों के बीच झड़पों के अन्त और दोस्ताना रिश्तों के पुनर्जन्म और सबसे महत्त्वपूर्ण, कई मुद्दों पर दोनों पार्टियों द्वारा संयुक्त हमलों (मार्च 2002 में झारखण्ड में तीन दिवसीय आर्थिक नाकाबंदी, इसका एक उदाहरण है) ने शासक वर्गों को हिला कर रख दिया है। कोम्पोसा का गठन, दक्षिण एशिया के अन्य देशों तथा भारत में काम कर रही माओवादी पार्टियों के बीच बढ़ती एकता एक उत्साहवर्धक विकास है।

ऐसी स्थिति में, तब भारतीय जनता के सामने मुख्य कार्यभार क्या है ?

तात्कालिक कार्यभार

भारत और दुनिया में उपरोक्त घटनाक्रम दर्शाते हैं कि साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के खिलाफ, अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ, अरब दुनिया पर इज्राइली प्रधान्यता के खिलाफ, दक्षिण एशिया में भारतीय विस्तारवाद के खिलाफ और दुनियाभर में बढ़ते हुए फासीवादी दमन के खिलाफ एक व्यापक आधार वाले आन्दोलन के निर्माण की अच्छी सम्भावना है।

यहां भारत में मौजूद सभी प्रगतिशील ताकतों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे दुनियाभर की सभी जनवादी ताकतों के साथ एकजुट हों ताकि अमेरिकी साम्राज्यवाद और दुनियाभर में फैले इसके दलालों के खिलाफ निशाना साधा जा सके। दुनियाभर की सभी अमेरिका विरोधी ताकतों को एकजुट होने की जरूरत है, इसके भीतर ही सर्वहारा ताकतों को मजबूत होना होगा।

भारत में राजकीय दमन तथा पोटा के खिलाफ; साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के खिलाफ; तथा बढ़ते हुए हिन्दू फासीवादी आतंक के खिलाफ जनता की राजनीतिक गोलबंदी को यहां चल रहे लोकयुद्ध के साथ प्रभावपूर्ण तरीके से समन्वित करना होगा। इन आन्दोलनों में सक्रियता से भाग ले रही जनता का राजनीतिकरण करना, उन्हें हथियारबंद करना और उन्हें एक पार्टी व पी.जी.ए. में संगठित करना होगा। पिछले अठारह महिनों में, पार्टी की नौवीं कांग्रेस द्वारा दिए गए आह्वान को लागू करने के लिए स्थितियां और ज्यादा अनुकूल हो गई हैं।

भारत की उत्पीड़ित जनता और सभी जनवादी नागरिकों !

सी.पी.आई. (एम-एल) [पीपुल्स वार] की केन्द्रीय कमेटी उन सभी से जो अपने देश और इसकी जनता से प्यार करते हैं, अपील करती है कि वे सामने आएं और उन लुटेरे नवाबों से आजादी के लिए लड़ें, जो अपने साम्राज्यवादी आकाओं (खासकरके अमेरिकी) की मदद से हमारे ऊपर शासन करते हैं। हिन्दू फासीवादियों द्वारा प्रायोजित खून-खराबे से देश को बचाएं। देशभर के जनआन्दोलनों पर हो रहे फासीवादी आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब दें। देश में चल रहे लोकयुद्ध का समर्थन करें और इसमें शामिल हों, आने वाली पीढ़ी के लिए एक न्यायपूर्ण व जनवादी व्यवस्था के लिए यही एकमात्र आशा की किरण है। आइए हम सभी भविष्य के एक नए समाज के लिए हाथ मिलाएं, एक ऐसे समाज के लिए जो सभी तरह के साम्राज्यवादी शोषकों और उनके भारतीय सहयोगियों से मुक्त होगा, जिसमें सभी को एक शानदार जिन्दगी जीने के समान अवसर उपलब्ध होंगे, जाति, औहदे या लिंग का कोई भेदभाव नहीं होगा।

यह सब करने के लिए हमने, अपने देश की जनता के लिए निम्नलिखित मांगें रखी हैं, जिन्हें देहातों में चल रहे लोकयुद्ध के साथ

एकीकृत होना होगा :

1. अमेरिकी साम्राज्यवाद के वैश्विक हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भारत की और दुनियाभर की तमाम फासीवाद-विरोधी ताकतों के साथ एकजुट हो।

2. भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण का मुखौटा ओढ़े हमारे देश में प्रवेश कर रहे साम्राज्यवादियों (खासकरके अमेरिकी साम्राज्यवादियों) का मुंहतोड़ जवाब दो।

3. हिन्दू फासीवादी हमले का मुंहतोड़ जवाब दो और फासीवादी गैंगों को ध्वस्त कर दो।

4. राजकीय दमन का विरोध करो, सभी गैर जनवादी कानूनों को रद्द करो।

5. जनता के सभी झूठे 'दोस्तों' के खिलाफ लड़ो, खासतौर पर संशोधनवाद की सभी किस्मों से और सामाजिक फासीवादी सी.पी.एम. के खिलाफ।

26 दिसम्बर, 2002 *क्रान्तिकारी शुभकामनाओं सहित,*

केन्द्रीय कमेटी

भाकपा (मा-ले) [पीपुल्स वार]

पाठकों के पत्र

'प्रभात' के सम्पादकों को लाल सलाम।

मैंने 'प्रभात' का अक्टूबर-दिसम्बर 2002 वाला अंक पढ़ा। पत्रों का स्तम्भ शुरू किए जाने की घोषणा पढ़कर मैं यह खत लिख रहा हूं।

- पत्रिका की सजावट आकर्षक रही। मुख्य रूप से 'वन भूमि से आदिवासियों की बेदखली' और 'पीजीए सन्देश' लेखों में मुख्य बिन्दुओं को और नारों को बीच-बीच में बॉक्स बनाकर डालना अच्छा रहा। इससे लेख की मुख्य बातों पर पाठकों का ध्यान जल्दी चला जाता है। मेरा सुझाव है कि हर महत्वपूर्ण लेख में यह तरीका अपनाया जाए तो बेहतर होगा। 'गुजरात गौरव-यात्रा', 'पूर्वी तिमोर' आदि लेखों में भी इस तरह करना चाहिए था।
- 'प्रभात' के अन्दर के पन्नों में बॉक्स आइटम के रूप में छपे विषय ठीक से दिख नहीं रहे थे। अक्षर भी काले थे और बॉक्स में काला रंग भरा गया था। अतः पढ़ना मुश्किल हो रहा था। यदि सम्भव होगा और आपको कोई तकलीफ नहीं होगी तो अक्षरों को लाल रंग में छापा जाए। इससे और ही आकर्षक रहेगा। वरना बॉक्स में काला रंग न भरा जाए -- कोरा ही रहने दिया जाए। रंग भी काला और अक्षर भी काले रहने से मुझ जैसे साइट वाले पाठकों के लिए पढ़ने में दिक्कत होगी। ध्यान दीजिएगा।
- वनभूमि से बेदखली, 'लाल सलाम' फिल्म समीक्षा, पर्यटन पर हमारी नीति आदि लेखों को समय पर पढ़ पाना हमारे लिए उपयोगी रहा। इन सवालों पर क्या नीति अपनानी चाहिए, इन्हें कैसे समझ लेना चाहिए, जनता में इन विषयों को कैसे ले जाया जाए – आदि बातों पर हमें स्पष्टता मिल गई। आशा करता हूं कि आप आगे भी इस तरह जरूरी विषयों को समय पर लिखते रहेंगे। सरकारी सुधारों के प्रति हमारी पार्टी के रवैये की आलोचना करते हुए बुर्जवाई अखबारों में कई बयान छप रहे हैं। उनके मुख्य तर्कों को लेकर, उनका सही जवाब देते हुए लेख लिखे जाएंगे तो ज्यादा एड्युकेटिव रहेगा।
- लेखों में कहीं-कहीं अंग्रेजी में संकेताक्षर लिखकर कोष्टकों में उसका हिन्दी अर्थ छापा जा रहा है। चूंकि संकेताक्षर अंग्रेजी का है, इसलिए अंग्रेजी में उसके विस्तृत रूप को हिन्दी अक्षरों में लिखना लाजिमी होगा। इसे या तो वहीं लिखा जाए या फिर संकेताक्षर जब अगली बार आएगा, वहां लिखा जाए। कहने का मतलब यह है कि स्तरीय पाठकों को अंग्रेजी संकेताक्षर का अंग्रेजी में विस्तृत रूप को जानना जरूरी लगता है। उदाहरण के लिए 'प्रभात' के दूसरे पन्ने में सी.ई.सी. का अंग्रेजी विस्तृत रूप नहीं लिखा गया। कोष्टक में हिन्दी अर्थ- 'केन्द्रीय अधीकृत कमेटी' भर लिखा गया। एक और जगह पर 'एफआईआर'के लिए कोष्टक में 'प्राथमिकी' लिखा गया है, जबकि 'फर्स्ट इनफर्मेशन रिपोर्ट' लिखना भी जरूरी था।
- कुछेक मौकों पर संकेताक्षर लिख रहे हैं पर कोष्टक में उसका विवरण लिखना भूल रहे हैं। कम से कम एक जगह भी लिख देते हैं तो बार-बार लिखने की जरूरत नहीं रहेगी। कुछ लेखों में एक बार भी नहीं लिख रहे हैं। उदाहरण के लिए पृष्ठ 31 में 'एलआईसी' लिखा गया है, पर कोष्टक में उसका विवरण नहीं दिया गया। इस विषय पर जरा ध्यान दीजिएगा।

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ,

शिवाजी

पत्र के लिए धन्यावाद। आपके सुझावों पर हम जरूर ध्यान देंगे। आशा है कि आप पत्रिका के साथ बातचीत का यह सिलसिला आगे भी जारी रखेंगे। ***- सम्पादक मण्डल***

पत्र लिखिए .....

हम सब यह बात जानते ही हैं कि पत्रिका एक संगठक है। एक संगठक को अपने कैडरों और जनता के साथ जीवन्त सम्बन्ध रखना जितना जरूरी है, एक पत्रिका को भी अपने पाठकों के साथ जीवन्त सम्बन्ध रखना उतना ही जरूरी है। ऐसा नहीं होगा, तो पत्रिका का काम भी उस संगठक के काम की तरह बन जाता है जो अपने कैडरों के विचारों से परिचित न हो और जिसने निचले स्तर से कभी आलोचना नहीं झेली हो। इसलिए, पत्रिका का अपने पाठकों के साथ निरन्तर बातचीत जारी रहना जरूरी समझकर, हमने इस अंक से 'पाठकों के पत्र' शुरू किया है। आशा है पाठकगण हमें जरूर पत्र लिखेंगे। खास तौर पर पत्रिका में छपने वाले लेखों और लिखी जा रही भाषा पर आपकी बेझिझक आलोचनाओं, सलाहों और सुझावों का हमें इन्तजार रहेगा। हमें उम्मीद ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि 'प्रभात' को एक अच्छे संगठक के तौर पर उभारने में आप अपना सहयोग जरूर देंगे।

— सम्पादक मण्डल

साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण और हिन्दू फासीवाद के खिलाफ मजबूत आन्दोलन का निर्माण करके जनयुद्ध को तेज करो !

भारत की जनता से सी॰पी॰आई॰ (एम-एल) [पीपुल्स वार] की केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी एक अपील

प्यारे कॉमरेडों और दोस्तों !

सी.पी.आई. (एम-एल) [पीपुल्स वार] पार्टी की ऐतिहासिक कांग्रेस को सम्पन्न हुए डेढ़ साल से भी ज्यादा समय हो चुका है। तब से लेकर अब तक कई बड़ी घटनाओं ने दुनिया को हिलाया है। 11 सितम्बर ने दुनिया के युद्ध परिदृष्य में एक उत्तेजक का कार्य किया, साथ ही अमेरिकी साम्राज्यवाद अपनी ताकत का प्रदर्शन करने लगा। भारत में भी, जैसे-जैसे भारत व अमेरिका का गठजोड़ मजबूत हुआ, हिन्दू फासीवादियों का आतंक नई ऊंचाइयों तक पहुंच गया, अब वे सारे देश को गुजरात सरीखे खून-खराबे में नहलाने की धमकी दे रहे हैं। गुजरात में हाल ही में हुई इनकी विजय ने इन्हें अन्य राज्यों में भी, भयावह परिणामों वाले, गुजरात के प्रयोग को दोहराने का लाइसेंस दे दिया है।

आज फासीवाद, राजकीय आतंकवाद और युद्ध ने भारत सहित दुनियाभर की अरबों जनता की जिन्दगियों को दहशत में डाल दिया है। पार्टी की नौवीं कांग्रेस की दूसरी केन्द्रीय कमेटी मीटिंग ने अपने महिनेभर लम्बे बहस-मुबाहिसों के बाद, क्षितिज पर मण्डरा रहे खतरे से होशियार किया और देश की जनता को इन अन्तर्राष्ट्रीय गुण्डों व उनके भारतीय गुर्गों के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान किया है।

जैसे-जैसे विश्व अर्थव्यवस्था में आर्थिक संकट गहरा रहा है, ये दानव जनता का ज्यादा से ज्यादा खून चूस रहे हैं। जनता के बहुत बड़े हिस्से को अमानवीय गरीबी और भुखमरी की दलदल में धकेला जा रहा है। दूसरी केन्द्रीय कमेटी मीटिंग ने भारत की जनता का आह्वान किया है कि वे भूमण्डलीकरण, निजीकरण व उदारीकरण की नीतियों के परिणामस्वरूप भारत की खोती हुई सम्प्रभुता और इसके विनाश के खिलाफ उठ खड़े हों और इसका सटीक जवाब दें।

ऐसी परिस्थितियों में हमारी पार्टी की दूसरी केन्द्रीय कमेटी मीटिंग ने अखिल भारतीय स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परिस्थितियों का जायजा लिया और तात्कालिक भविष्य के लिए कार्यभार तय किए।

साम्राज्यवाद का गहराता संकट

साम्राज्यवाद का आर्थिक संकट पिछले 18 महिनों से लगातार गहराता जा रहा है, जिसने सभी प्रमुख साम्राज्यवादी ताकतों (अमेरिका, यूरोपियन यूनियन, जापान, रूस आदि) को प्रभावित किया है। खास करके अमेरिकी साम्राज्यवाद 1980 के दशक से ही बदतरीन संकट की चपेट में है। इसका गहराते जाना लगातार जारी है। जापान की मंदी अब एक दशक से भी ज्यादा पुरानी हो चुकी है। यूरोप की स्थिति भी डांवाडोल है, जबकि जर्मनी की अर्थव्यवस्था चालू वर्ष में ही मंदी की ओर जा रही है। जब से रूसी अर्थव्यवस्था का आकार सिकुड़ कर बेल्जियम की अर्थव्यवस्था से भी छोटा हो गया है, यह भी लगातार ठहराव की स्थिति में है। इस संकट ने एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देशों को प्रभावित किया है। अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था, जिस पर 140 बिलियन डॉलर का विशालकाय विदेशी कर्ज है, के ढहने से समस्त लैटिन अमेरिका और अन्य स्थानों को डरावने संदेश मिले हैं। इस संकट के परिणामस्वरूप आज की दुनिया में सभी आधारभूत अन्तरविरोधों में और ज्यादा तीखापन आ गया है।

साम्राज्यवादी अपने संकट का बोझ सीधे-सीधे या फिर डब्ल्यू. टी.ओ. जैसे बहुआयामी संस्थानों के माध्यम से दुनिया के पिछड़े देशों की सिर पर लादना चाहते हैं। अमेरिकी साम्राज्यवाद अपने संकट से उबरने की कोशिश कर रहा है और अपनी अर्थव्यवस्था का अन्धाधुन्ध सैन्यीकरण व विशालकाय पैमाने पर युद्ध की तैयारियां जारी रखकर संकट के असली कारणों की ओर से जनता का ध्यान हटाने का प्रयास कर रहा है। 11 सितम्बर की घटना ने इसमें एक उत्प्रेरक का काम किया है, और अमेरिकी अर्थव्यवस्था के संकट को और भी ज्यादा गहरा दिया है तथा दुनियाभर में इसकी युद्ध-पिपासा को भी बढ़ाया है। अमेरिका, 11 सितम्बर की घटना का इस्तेमाल, सैन्य कार्यवाहियों के लिए विशाल धनराशि मुहैया कराने और उसकी बात न मानने वाले देशों, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों, क्रान्तिकारी आन्दोलनों और तथाकथित आतंकवादी संगठनों के खिलाफ अपने हमलों को जायज ठहराने के लिए कर रहा है। आतंकवाद का मुकाबला करने के नाम पर सभी साम्राज्यवादी देशों ने अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशाल धनराशि मुहैया कराई है। खुद अमेरिका में ही, बुश सरकार ने अपने 22 गुप्तचर विभागों को एक करके होमलैण्ड सिक्यूरिटी डिपार्टमेन्ट बनाया है। कानूनों व विधेयकों के माध्यम से फासीवादी कदम उठाये जा रहे हैं।

अफगानिस्तान के खिलाफ युद्ध, इराक पर हमले और जबरदस्त बमबारी करके देश को तहस-नहस कर डालने की धमकी, दुनियाभर के कई संगठनों पर पाबन्दी, उन संगठनों की सम्पत्तियों की जब्ती, और दुनियाभर में साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शनकारियों तथा मुस्लिम संगठनों के सदस्यों व उनके हमदर्दों को यातनाएं देना तथा बंदी बनाना एक आम बात हो गई है। अमेरिकी साम्राज्यवाद ने दुनिया की क्रान्तिकारी ताकतों के खिलाफ अपने हमलों को तेज कर दिया है, खासकरके फिलीपीन्स व नेपाल के माओवादियों के खिलाफ। अप्रत्यक्ष रूप से भारत सहित दुनिया भर के क्रान्तिकारी आन्दोलनों के खिलाफ यह कम तीव्रतावाले झड़प अभियानों को प्रायोजित करता है। **(शेष पृष्ठ 24 पर ....)**